# वातायन

**कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)**

**ओड़िशा भुवनेश्वर**

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक) कार्यालय की ओर से उपमहालेखाकार श्री दिनमणि मल्लिक द्वारा मुख्य मंत्री महोदय को रिलिफ फंड हेतु चैक प्रदान करते हुए।

## कल्याण गतिविधियों

## हिंदी गतिविधियों की कुछ झलकियाँ

# वातायन

सत्यमेव जयते

**वर्ष 2019-20**

**अप्रैल से सितंबर 2019**

अंक: 98 अवधि-छमाही

**राजभाषा की सेवा में**

कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

ओड़िशा, भुवनेश्वर

मुख पृष्ठ: श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी

# वातायन पत्रिका परिवार


## संरक्षक

**श्रीमती मधुमिता बसु**
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा, भुवनेश्वर

## प्रकाशन एवं मार्गदर्शन समिति

**श्री दिनमणि मल्लिक**
उपमहालेखाकार (प्रशासन)

**श्री मसरूर अहमद**
उपमहालेखाकार (लेखा व वीएलसी)

**श्री नंद दुलाल दास**
उपमहालेखाकार (पेंशन)

## संपादक

**श्री रवीन्द्र नाथ चाँद**
हिन्दी अधिकारी

## सहयोग

**श्री सुन्दर लाल साव**, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

**श्री राजेश कुमार कटरे**, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

**कुमारी बबिता मणि**, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक


पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार व भावनाएं हैं कार्यालय व संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है!

## प्रधान महालेखाकार का संदेश

हमारे कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका वातायन का नवीनतम अंक प्रकाशित हो रहा है यह अत्यंत हर्ष की बात है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए हमारे कार्यालय में कार्यरत कर्मचारी एवं अधिकारियों के सफल प्रयास से हिंदी निरंतर प्रगति की ओर बढ़ रही है।

प्रति वर्ष राजभाषा पत्रिका वातायन के दो अर्धवार्षिक अंक प्रकाशित होना एवं हर अंक में कुछ नए रचनाकारों को जोड़ना काफी सराहनीय कार्य है। इसके अलावा कार्यालय के स्टाफ सदस्यों में भी हिंदी के प्रति सौहार्दपूर्ण वातावरण बनता जा रहा है जिससे इसके प्रचार प्रसार में सकारात्मक सहयोग मिल रहा है। मुझे उम्मीद है कि कार्यालय में हिंदी के प्रति ऐसी ही भावनाएं निरंतर बनी रहेंगी एवं राजभाषा के कार्यान्वयन को लक्ष्य तक पहुंचाने में मील का पत्थर साबित होंगी।

मैं पत्रिका के साथ हिंदी से जुड़े सभी रचनाकारों एवं स्टाफ सदस्यों को साधुवाद देती हूं एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हुई संपादक मंडल को सफल संपादन के लिए बधाई देती हूं।

**मधुमिता बसु**
प्रधान महालेखाकार

# संदेश

हिंदी पखवाडा समारोह के अवसर पर कार्यालयीन राजभाषा गृह पत्रिका "वातायन" का 98वें अंक प्रकाशित करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। हमारे कार्यालय के कर्मचारी एवं अधिकारीगण हिंदी लेखनी के माध्यम से अपनी रचना प्रतिभा को लोगों तक पहुंचा रहे हैं यह वाकई में प्रशंसनीय है। यह कार्यालय ग क्षेत्र में होते हुए भी यहाँ हिंदी भाषा का प्रयोग दिन व दिन बढ़ता जा रहा है इसमें कोई संदेह नहीं है।

कार्यालय में आयोजित होने वाली हिंदी के लगभग सभी प्रकार के कार्यक्रमों में काफी सहभागिता मिलती रहती है एवं हिंदी में वार्तालाप होता रहता है। कुल मिलाकर, कार्यालय में सालभर हिंदी का सकारात्मक माहौल बना रहता है।

इन्हीं विचार धाराओं के आयाम पर हिंदी पखवाड़ा के इस पावन अवसर पर मैं कार्यालय के समस्त साथियों से यह गुजारिश करता हूं कि, आइए हम सब मिलकर वर्ष भर इसी तरह कार्यालय में राजभाषा का माहौल बनाए रखें एवं अपनी रचना कला की सहभागिता से राजभाषा पत्रिका "वातायन" को उत्कृष्ट पत्रिका बनाने में भरपूर योगदान दें।

अंत में मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए सभी रचनाकारों तथा सम्पादक मण्डल को हृदय से बधाई देता हूँ।

**दिनमणि मल्लिक**

उपमहालेखाकार (प्रशासन)

# संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

हमारे कार्यालय की राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका वातायन के 98वें अंक पुन: कार्यालय के कुछ नए रचनाकारों की रचनाओं के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए आनंद अनुभव हो रहा है। हिंदी के प्रचार प्रसार को अपने कार्यालय में बढ़ावा देने के लिए लेखनी के माध्यम से साथी कर्मचारियों को वातायन के साथ जोड़ने का हमारा निरंतर प्रयास बना रहता है।

सच बताएं तो इन दिनों धीरे-धीरे कार्यालय में यह देखने में आ रहा है कि अब पहले जैसे लोगों को हिंदी भाषा में लिखने के लिए उतना मोटिवेट नहीं करना पड़ता जैसा कुछ वर्ष पहले करना पड़ता था। लोग स्वत: पूछने लगते हैं कि पत्रिका का आगामी अंक कब निकलने वाला है। बेशक यह हिंदी भाषा की लोकप्रियता एवं सकारात्मक सोच का संकेत है एवं इससे यह जाहिर होता है कि लोगों में हिंदी के लिए पहले जो झिझक थी वह अब कम होने लगी है। हमें उम्मीद है कि राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों की भावनाएं बदल रही है एवं इसके प्रचार प्रसार में काफी मदद हो रही है।

हमारे रचनाकारों के मनोबल बनाए रखने के लिए मैं प्रिय सुधी पाठकों से विनम्र निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे रचनाकारों की रचनाओं के बारे में तथा पत्रिका के बारे में आप अपनी कीमती प्रतिक्रियाएं भेज कर पत्रिका को अधिक निखारने में सहयोग करें।

सधन्यवाद।

**रबीन्द्र नाथ चांद**
संपादक

# अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | रचना | रचनाकार | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1 | प्रधान महालेखाकार का संदेश | | |
| 2 | उपमहालेखाकार प्रशासन का संदेश | | |
| 3 | संपादकीय | | |
| | **गद्य विभाग** | | |
| 1 | कार्यालय वेबसाईट | श्री गौरी रंजन मिश्र,वरिष्ठ लेखा अधिकारी | 9 |
| 2 | राष्ट्रीय एकता की डोर : हिंदी | श्री राजेश कुमार कटरे,कनिष्ठ हिंदी अनुवादक | 11 |
| 3 | सिर्फ कपड़े नहीं सोच भी ब्राँडेड होनी चाहिए | कुमारी बबिता मणि, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक | 14 |
| 4 | खानपान की बदलती तस्वीर | श्री त्रिनाथ मल्लिक, लेखाकार | 18 |
| 5 | नैतिक मूल्य और आध्यात्मिकता का महत्व | श्री सुकांत कुमार महांति, सहायक लेखा अधिकारी | 20 |
| 6 | द्वारका यात्रा वृतांत | श्री चार ओराम, सहायक लेखा अधिकारी | 21 |
| 7 | भारत के नियंत्रक-महालेखा परीक्षक : कुछ बातें | श्री पुरूषोत्तम नंद, सहायक लेखा अधिकारी | 22 |
| 8 | मेरी तमन्ना | श्रीमती शांतिलता सेठी, वरिष्ठ लेखाकार | 24 |
| 9 | मायापुरी | सुश्री सोनी कुमारी साव, डीईओ | 28 |
| | **पद्य विभाग** | | |
| 1 | साभार | श्री दिनमणि मल्लिक, उपमहालेखाकार | 30 |
| 2 | नन्दिघोष का दारूदेवता | श्री बिभूति भूषण सामंतराय, वरिष्ठ लेखा अधिकारी | 31 |
| 3 | ललकार | श्री रबीन्द्र नाथ चांद | 32 |
| 4 | मच्छर की लगन | श्री विश्वास कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी | 33 |
| 5 | राजभाषा | श्री सीमाचल साहू, वरिष्ठ लेखा अधिकारी | 34 |
| 6 | फनी | सुश्री रूपा नीलमणि एक्का, वरिष्ठ लेखाकार | 34 |
| 7 | बाबुल का आँगन | सुश्री मोती प्रधान, लिपिक | 35 |
| 8 | गुरू | श्री वीरेन्द्र यादव, वरिष्ठ लेखाकार | 36 |
| 9 | पंछी हैं हम | श्री अभय कुमार सामंतराय, वरिष्ठ लेखाकार | 37 |
| 10 | क्या आप जानते हो | श्री सुव्रत कुमार सिंह, लिपिक | 37 |
| 11 | ग्राहक | श्री मनोरंजन पाणिग्रही, लेखा अधिकारी | 38 |
| | **विविधा** | | |
| 1 | कार्यालय समाचार | | 39 |
| 2 | पाठकों की पाती | | 42 |

# कार्यालय वेबसाईट

**श्री गौरी रंजन मिश्र,**
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

चारों कार्यालयों जैसे कि प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), महालेखाकार (सामान्य एवं समाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) एवं प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा), पूर्वतट रेलवे के लिए एक ही है जो प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) कार्यालय द्वारा व्यवस्थित किया जाता है। सभी कार्यालयों को उनके कार्यालय संबंधी विभिन्न सूचना/जानकारी को संचालित करने का अधिकार है। इसलिए प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) कार्यालय की वेबसाईट पर निम्नलिखित सूचना/जानकारी उपलब्ध है :-

1. प्रपत्र टैब के अंतर्गत सामान्य भविष्य निधि और पेन्शन से संबंधित विभिन्न प्रपत्र डाऊनलोड/प्रिंट करने के लिए उपलब्ध है।
2. आर.टी.आई टैब के अंतर्गत अपीलीय प्राधिकारी सीपीआईओ एवं एपीआईओ के नाम और संपर्क संबंधी ब्यौरा आरटीआई अधिनियम के तहत उपलब्ध है।
3. टेन्डर टैब के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के निविदाओं से संबंधित सूचनाएं संचालित की गई हैं।
4. एक फोटो गैलरी भी है जिसमें विभिन्न अवसरों पर लिए गए तस्वीरों को रखा गया है।
5. हिंदी सेक्शन में हिंदी पत्रिका 'वातायन' की प्रति को देख/डाऊनलोड कर सकते हैं।
6. एक एफ ए क्यू सेक्शन भी है जिसमें इस कार्यालय के कार्यों के बारे में प्राय: पूछे गए प्रश्नों और उनसे संबंधित दिए गए उत्तरों का समावेश है।
7. कान्टेक्ट इस टैब में इस कार्यालय का ई-मेल, फोन नंबर आदि से संबंधित जानकारी को प्रदर्शित किया गया है।
8. सेवानिवृत्ति के लिए शेष राज्य सरकार के कर्मचारियों की सूची भी प्रदर्शित की गई है।
9. लेखा अनुभाग के अंतर्गत अकाऊन्ट्स ऐट अ ग्लान्स, विनियोग लेखा, वित्त लेखा एवं मासिक सिविल लेखा को प्रदर्शित किया गया है। जी.पी.एफ. अनुभाग के अन्तर्गत सा.भ.नि. अंतिम अदायगी मामले की जॉंच सूची, सा.भ.नि. से संबंधित मार्गदर्शिका एवं माह के दौरान निपटान किए गए एफ.पी. मामलों की सूची को प्रदर्शित की गई है।

10. माह के दौरान निपटान किए गए पेन्शन से संबंधी मामलों की सूची भी पेन्शन अनुभाग के अंतर्गत प्रदर्शित किया गया है।

11. शाखा कार्यालय पुरी से संबंधित सूचना/जानकारी निर्माण कार्य अनुभाग में उपलब्ध है।

12. वेबसाईट पर एक सिटीजन कार्नर भी है जिसके माध्यम से सामान्य भविष्य निधि अंशदाता अपनी सा.भ.नि. का विवरण देख/डाऊनलोड/प्रिंट कर सकते हैं। वैसे तो इस सुविधा का लाभ उठाने के लिए उन्हें (सा.भ.नि.अंशदाता) को अपना मोबाईल नंबर पंजीकृत करना होता है लेकिन अब 1998-99 से पंजीकृत अंशदाता अपने सा.भ.नि. विवरण का डिटेल देख/डाऊनलोड/प्रिंट कर सकता है। 1998-99 से पूर्व के अपने सा.भ.नि. विवरण को भी वो सार रूप में देख सकते हैं।

13. सिटिजन कार्नर के अंतर्गत सा.भ.नि. अदायगी मामलों एवं पेंशन मामलों के समाधान से संबंधित प्रावधान भी वेबसाईट पर उपलब्ध हैं।

14. उपरोक्त के संबंध में महत्वपूर्ण अधिसूचनाएं, विभिन्न न्यूज एवं कार्यक्रमों को नियमित रूप से संचालित किया जाता है। हम वेबसाईट को अप टु डेट करने की कोशिश में निरंतर प्रयत्नशील है एवं सभी हितधारकों को जरूरी सूचना/जानकारी नियमित रूप से प्रदान कर रहे है।

## सुक्तियाँ

धूप का ऐसा ताना वितान, अंधेरा कठिनाई में फंसा।
भागने की जब मिली न राह, आदमी के भीतर जा बसा।।

*-रामधारी सिंह "दिनकर"*

अंजान बनकर सुनना ही विद्वान पुरूष का लक्षण है।

*- अष्टाचक्र*

मनुष्य जन्म से ही न तो मस्तक पर तिलक लगाकर आता है, न यज्ञोपवित धारण करके।
जो सत्कार्य करे, वह द्विज है और जो कुकर्म करता है, वह नीच।

*-गौतम बुद्ध*

धनी को अपने धन का मद रहता है, घमंड रहता है, परंतु गरीब के झोपड़े में क्रोध और अंहकार के लिए स्थान नहीं रहता।

*-प्रेमचंद*

अपनी विद्वता पर गर्व करना सबसे बड़ा अज्ञान है।

*-श्रीमद्भागवत*

# राष्ट्रीय एकता की डोर : हिंदी

**श्री राजेश कुमार कटरे,**
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

प्रस्तावना : भारत में भाषा को लेकर बहुत भ्रम और विवाद है। सच तो यह है कि भाषा हमारी शक्ति होनी चाहिए, कमजोरी नहीं। भाषा हमारे संपूर्ण व्यक्तित्व, चरित्र और अस्तित्व की अभिव्यक्ति है। हमारी प्रगति, उपयोगिता और सामाजिक सशक्तिकरण का मूल आधार भाषा ही है। संपूर्ण विश्व में अनेक छोटे-छोटे देश हैं, उनकी स्वयं की जीवन पद्धति और भाषाएं हैं। उन्होंने सदैव अपनी भाषाओं को पोषित और संरक्षित किया है, उसे सतत समृद्ध भी बनाया है। भाषा को आधार बनाकर विकास के कीर्तिमान रचे हैं तथा कहने, सुनने, लिखने और विचारों के संप्रेषण हेतु अपनी भाषा को सर्वोपरि रखा है। अनेक देशों ने अपनी मातृभाषा के दम पर विकास के जो कीर्तिमान गढ़े हैं वे दुनिया के सामने हैं। चीन, फ्रांस, जापान, दक्षिण कोरिया, रूस, जर्मनी जैसे देशों की सूची बहुत लंबी है, जिन्होंने केवल अपनी भाषाओं की ताकत पर चौतरफा चमत्कार किए हैं और विकास के अनेक सोपान तय किए हैं।

अंग्रेजीयत से बचें : क्या भाषा के अनुप्रयोग एवं प्रचालन में हमसे चूक हो रही है ? अंग्रेजों की लंबे समय तक गुलामी, शोषण और हमारे अधिकारों के हनन की कहानी सर्वज्ञात है। दासता के एक लंबे दौर ने भारतीयों के मनोविज्ञान पर गहरा असर डाला है। अंग्रेजी और अंग्रेजियत के दबदबे का असर बहुत गहरा पड़ा। हजारों वर्ष के हमारे महान इतिहास, संस्कृति और ज्ञान पर अंग्रेजियत हावी रही। हम एक अजीब मन:स्थिति में जीने के लिए बाध्य रहे।

सांस्कृतिक और भाषायी विविधताओं से परे अंग्रेजी हमारे सिर पर चढ़ी रही। असर इतना गहरा रहा कि हम अब तक उबर न सके। दुर्भाग्य ही है कि हम आज भी अंग्रेजी बोलनेऔर जानने वाले को विद्वान समझते हैं, उसके रौब को स्वीकारते हैं, पर सच यह भी है, कि कुछ अंग्रेजी बोलने वाला भी मूर्ख हो सकता है। आजादी के इतने वर्षों बाद तो इस भ्रम को दूर करें। अपनी भाषा, कला, संस्कृति और परंपरा को संरक्षित करें साथ ही समृद्ध बनाएं।

अनेक सरकारी प्रयासों के बाद भी बहुत कुछ करना शेष है। राजभाषा प्रेमियो और इससे जुड़े संसाधनों को चाहिए कि हिंदी के प्रोत्साहन हेतु औपचारिकताओं से बहुत ऊपर उठकर कार्य करें। राजभाषा से जुड़े कार्यक्रम किसी विशेष माह, सप्ताह या दिन से हटकर हमारे नियमित कामकाज का हिस्सा और आदत बनें तो हिंदी के उत्थान के लिए बेहतर होगा। विविधताओं से भरे इस देश में लोग मानते हैं कि हिंदी

को सर्वमान्य बनाना कठिन है पर सत्य तो यह है कि समूचे देश को एक सूत्र में बांधने का कार्य केवल हिंदी कर सकती है, कर रही है और काफी हद तक जाने-अनजाने ही कर चुकी है।

**हिंदी को बनाएं राष्ट्र के विकास का माध्यम :** हिंदी हमारी एकता से उपजी शक्ति है। इस शक्ति को राष्ट्र के विकास का माध्यम बनाना होगा। आज अंग्रेजी के जुनून और क्षेत्रीय भाषाओं की संपन्नता के बाद भी एक हिंदी ही है जो राष्ट्र को एक सूत्र में बांधती है। हिंदी राजभाषा है यानी सरकार द्वारा प्रदत्त अधिकारों से जुड़ी भाषा है। भाषा हमारी भावना और हृदय से गहरी जुड़ी चेतना की अभिव्यक्ति है। सरकारी कानूनों, संशोधनों और संवैधानिक द्वारा भाषा को संरक्षण एक अच्छी पहल है, किंतु उससे भी अधिक अनिवार्य है "भाषा का हृदय से जुड़ाव और आत्मा से स्वीकृति" और यह स्वीकृति चेतना के संज्ञान स्तर की हो।

समाज और राष्ट्र इसे सरकारी प्रपंच न मानकर मन से स्वीकारें। यानी हमारी राजभाषा जनभाषा बने। हिंदी लोक की भाषा बने यानी लोकभाषा बने। हिंदी को हृदय से जोड़ने के प्रयास अब समाज करे। समूचे विश्व में भी हिंदी साहित्य और महान हिंदी ग्रंथों को सम्मान से पढ़ा जाता है। अनेक ग्रंथों से विदेशी भाषाओं में अनुवाद, हिंदी के दम का परिचायक है। कंप्यूटर में हिंदी सॉफ्टवेयर या मोबाईल फोन में हिंदी संबंधित एपलिकेशन बेहद लोकप्रिय हैं। अंग्रेजी शब्दकोश में हिंदी के सैकड़ों लोकप्रिय शब्दों का समावेश हिंदी की ताकत और सार्वभौमिकता को दर्शाता है। यह हिंदी के प्रति आदर का प्रतीक है।

सरकारी काम-काज में हिंदी और बैंकों में हिंदी अब आम चलन की भाषा है। देश के गैर हिंदी भाषी राज्यों में और अनेक दूसरे देशों में भी साहित्य, सिनेमा और दूरसंचार के जरिए लोग हिंदी सीखने के लिए लालायित हैं। ऐसा करने के पीछे हालांकि उनके दीर्घकालिक व्यवसायिक उद्देश्य भी हैं। दक्षिण भारतीय और अनेक विदेशी फिल्मों का हिंदी रूपांतरण अत्यंत लोकप्रिय है। आज भारत को ऐसी अखंड एकता, सद्भाव और विकास से जुड़ने की जरूरत है, नि:संदेह वह शक्ति केवल हिंदी भाषा में ही है।

**परिवेश के अनूरूप ढलना होगा हिंदी को :** हिंदी के संबंध में फैले संशय दूर होने चाहिए। हिंदी के विद्वानो, लेखकों और भाषाविज्ञानियों को इसके सरलीकरण पर अधिक ध्यान देना चाहिए। विचारों के संप्रेषण के अनेक माध्यम हैं। भाषा उनमें से सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। अत: संप्रेषण में भाषा की जटिलता उचित नहीं है। हिंदी को परिवेश के अनुरूप ढलना होगा। लोकभाषा का अर्थ ही यही है। स्थान, समुदाय, परिस्थिति और आवश्यकता के अनुरूप भाषा का लचीलापन संपूर्ण समाज को गति देता है।

हिंदी में होने वाले भाषायी प्रयोगों और शोध कार्यों पर निगरानी अवश्य रखनी चाहिए। इसका उद्देश्य हो कि हिंदी औपचारिकताओं से परे हो और एक स्वच्छंद अविरल नदी की भाँति बहे। भाषायी सजावट से मुक्त भाषा ही सबकी भाषा अथवा लोकभाषा बन सकती है अत: हिंदी को जटिल बंधनों के आडम्बर से मुक्त रखना जरूरी है। भारत के कोटि-कोटि जन हिंदी को हृदय से लगायें इसके लिए भाषा की सरलता के साथ इसे सक्षम और प्रत्येक दृष्टि से संपूर्ण बनाया जाए।

भारत की जनसंख्या विश्व की जनसंख्या का लगभग पांचवा भाग है। हिंदी सीखकर दुनिया के बड़े-बड़े व्यवसायिक प्रतिष्ठान अपना बाजार ढूँढते हैं। वैश्वीकरण और बाजारीकरण में ऐसा होना स्वाभाविक भी है। हिंदी की महिमा से उनके उत्पाद ऊँची छलांग लगा रहे हैं। बिना किसी संस्थागत योगदान के हिंदी पूरे देश की संपर्क भाषा है यह हिंदी का ही दम है।

उपसंहार : हमारा प्रयास हिंदी को सरल, सुगम, बनाने के लिए हो। हिंदी को अधिक शुद्धता के चक्कर में न फंसाकर इसे आम लोगों से जोड़ा जाए। हिंदी हमारी राजभाषा है, मातृभाषा है अब यह लोकभाषा और जनभाषा बने तभी भारत के समग्र विकास में हिंदी एक सक्षम माध्यम साबित होगी। चूंकि विकास के दौर में नये-नये तकनीकी अथवा गैर तकनीकी क्षेत्रों का उद्भव हो रहा है जिसकी शब्दावली भी इन्हीं के अनुरूप बदलती रहती है। अत: उचित होगा कि एक नियमित समयांतराल के बाद नया शब्दकोश प्रकाशित किया जाए जिसमें यथोचित ढंग से हिंदी के साथ परिवर्तित शब्दावली के आयामों को भी शामिल किया जाना चाहिए ताकि जनसामान्य परिवर्तनों को अपनी भाषा में ढाल सकें। अनेकता में एकता का प्रतीक भारत देश में भाषायी एकता की महती आवश्यकता है।

## सुक्तियाँ

आगे बढ़ो! हाथ पर हाथ मत रखो। कुछ करो, तभी कुछ पाओगे। ऐ मनुष्य! तेरा जन्म इसी कारण हुआ है, इसे व्यर्थ मत करो।

*-स्वामी रामदास*

आत्मविश्वास सरीखा दूसरा मित्र नहीं। आत्मविश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम सीढ़ी है। अतः सर्वप्रथम आत्मविश्वास करना सीखो।

*-विवेकानंद*

दुनिया की चीजों में सुख की तलाश फिजूल है। आनंद का खजाना तो हमारे अंदर है।

*-स्वामी रामतीर्थ*

कुशल बन, दीर्घसूत्री नहीं।

*-जैन उपदेश*

जबतक तुममें दूसरों को व्यवस्था देने या दूसरों के अवगुण ढूंढने या दूसरों के दोष ही देखने की आदत मौजूद है, तबतक तुम्हारे लिए ईश्वर का साक्षात करना अत्यन्त कठिन है।

*-स्वामी रामतीर्थ*

उत्साही के लिए लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं।

*-वाल्मिकी रामयण*

# सिर्फ कपड़े नहीं सोच भी ब्रॉंडेड होनी चाहिए।

**कुमारी बबिता मणि,**
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

आजकल एक शब्द बहुत ही ज्यादा प्रचलित है "ब्रॉण्डेड"। जिसको देखो वही किसी न किसी ब्रॉण्ड की ही बात करता रहता है। और करें भी क्यों न, होता भी तो ऐसा ही है। अपने दैनिक जीवन की जरूरतों को पूरा करने के लिए हम जो भी कुछ प्रयोग करते हैं वो किसी न किसी ब्रॉण्ड से अवश्य जुड़ा होता है। चाहे वो खान-पान का सामान हो या फिर पहनावा हो। चाहे वो श्रृंगार का सामान हो या फिर कुछ और। वर्तमान में हर कोई किसी न किसी ब्रॉण्ड का दिवाना है। जब भी बाजार में निकलो तो किसी न किसी से कोई न कोई नए ब्रॉण्ड का नाम सुनने को मिल ही जाता है। अगर हमें कोई सामान खरीदना हो और उस सामान के बारे में हम किसी से पूछते हैं तो वह कुछ और बताए या ना बताए लेकिन एक शब्द का प्रयोग जरूर करता है और वो है "ब्रॉण्डेड"।

आप एक बार बस पूछ तो लीजिए। आपको को किस ब्रॉण्ड का सामान लेना चाहिए सामने वाला आपको तुरन्त बता देगा। यहीं पर ही ये किस्सा समाप्त नहीं होता है, वो व्यक्ति आपको ब्रॉण्ड के नाम के साथ-साथ उसकी ढेर सारी खूबियाँ भी गिना देगा। जैसे कि इस ब्रॉण्ड का कपड़ा बहुत अच्छा होता है, उसका रंग नही जाता है, उस ब्रॉण्ड का जूता बहुत ही आरामदायक होता है आदि आदि। अब तो किसी को भी ब्राण्डेड सामान के अलावा कोई लोकल चीज अच्छी ही नहीं लगती है। अब आप लोग ये सोच रहे होंगे कि अरे ये सब क्या लिखा है इसने।

ब्रॉण्डेड सामान तो वाकई में सबसे अच्छा होता है। तो आप लोग बिल्कुल सही हैं क्योंकि मेरा भी मानना है कि ब्रॉण्डेड सामान ज्यादा मजबूत, टिकाऊ और आरामदायक होता है क्योंकि कहीं न कहीं मैं भी किसी न किसी ब्रॉण्ड के वस्तुओं को ज्याद महत्व देती हूँ। इसलिए मेरा ये लेख किसी ब्रॉंण्ड के विरोध में नहीं बल्कि उन लोगों के विरोध में हैं जो अपने दैनिक जीवन की हर एक चीज किसी न किसी अच्छी ब्रॉंण्ड की तो प्रयोग करते हैं लेकिन अपनी सोच को ब्रॉंण्डेड बनाने की कोशिश नहीं करते हैं। मेरे इस लेख का उद्देश्य किसी ब्रॉंण्ड को गलत साबित करना नहीं हैं। इसलिए मैं अपने इस लेख में किसी भी प्रकार के ब्रॉंण्ड के नाम का उल्लेख नहीं करूँगीं क्योंकि किसी भी व्यक्ति के ब्रॉंण्डेड वस्तुओ के प्रयोग करने से उसकी सोच का कोई लेना-देना नहीं होता है और अगर कोई व्यक्ति ब्रॉंण्डेड चीजों का इस्तेमाल करे और अपनी सोच को ब्रॉंण्डेड न बनाए तो इसमें उस व्यक्ति का दोष है न कि उसके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाले ब्रॉंण्डेड सामानों का।

वो एक बात तो आप सबने सुनी ही होगी कि चाकू का अविष्कार फलों और सब्जियों को काटने के लिए किया गया है लेकिन अगर उसका प्रयोग कोई व्यक्ति किसी का गला काटने के लिए करता है तो इसमें चाकू की नहीं अपितु उस व्यक्ति की गलती है जिसने उस चाकू का प्रयोग गला काटने के लिए किया है। बिल्कुल ऐसा ही कुछ ब्रॉण्डेड चीजों का प्रयोग करने वाले लोगों के साथ भी है जो कपड़े तो ब्रॉण्डेड पहनते हैं लेकिन उनकी सोच बहुत ही छोटी होती है।

ये कहानी किसी एक व्यक्ति की नहीं अपितु सबकी है। बिरले ही ऐसे लोग होते हैं जो ब्रॉण्डेड परिधानों का प्रयोग करने के बाद भी सबके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। आजकल लोगों को कोई सामान बाजार में ठेले वाले से लेने में शर्म महसूस होती है। और जहाँ तक मैंने देखा है, ये ही वो लोग हैं जो ब्रॉण्डेड वस्तुओं की तो बात करते हैं लेकिन अगर कभी सड़क पर किसी सामान्य दुकान से कुछ लेने की बारी आती है तो वो उन छोटे दुकानदारों से दुनिया भर की सौदेबाजी करते हैं लेकिन जब बात शोरूम या किसी मॉल की आती है तो कोई मोल भाव नहीं करते हैं। क्या ये सच है कि जब हम किसी ब्रॉण्डेड परिधानों का प्रयोग करते हैं तो हमारी सोचने की क्षमता भी बदल जाती है? नहीं, बिल्कुल नहीं। ये सब एक प्रकार की मनगढ़ंत कहानी है। और जो ऐसा करता है वो जानबूझकर ऐसा करता है। अक्सर ये देखने में आता है कि जो लोग सम्पन्न परिवार के होते हैं वो एक सामान्य दुकान से कोई भी वस्तु खरीदने में हिचकिचाते हैं। उनके दिमाग में ये बात घूमती रहती है कि वो इतने बड़े घर के होकर इतनी छोटी सी दुकान से सामान ले रहें हैं।

प्रायः ये भी देखने को मिलता है कि जो लोग मँहगी गाड़ियों में घूमते हैं या ब्रॉण्डेड चीजों का इस्ते-माल करते हैं वो अक्सर किसी छोटी एवं सामान्य सी दुकान से कोई चीज खरीदने वाले लोगों को हेय दृष्टि से देखते हैं। मैं ये सब देखकर दंग रह जाती हूँ कि आखिर ये लोग ऐसा क्यों करते हैं। क्या वो लोग, जो ब्रॉण्डेड वस्तुओं का प्रयोग नहीं करते हैं, वो इंसान नहीं हैं? भगवान ने तो सबको एक समान ही बनाया है। सबकी रगो में खून तो एक ही सा दिया है न, तो फिर ये ब्रॉण्डेड चीजों का इस्तेमाल करने वाले लोग कौन होते हैं किसी को उनके सस्ते कपड़े से जज करने वाले। अगर कभी किसी को भी भूल से भी किसी सामान्य परिवार वाला व्यक्ति कोई कॉम्प्लीमेंट दे देता है जैसे कि तुम्हारी ड्रेस बहुत अच्छी लग रही है या फिर तुम्हारा जूता या घड़ी बहुत ही अच्छा है तो सामने वाला व्यक्ति तुरन्त जवाब देता है कि अच्छा तो होगा ही ब्रॉण्डेड जो है। ये सब क्या है? मैं सोचती हूँ ये सब एक छोटी सोच का प्रमाण है। मैं इतना सबकुछ ऐसे क्यों लिख रही हूँ चलिए इसके बारे में बताती हूँ। मैं अपने ही साथ हुए एक घटना का वर्णन करना चाहूँगी जिससे मुझे यह लेख लिखने की प्रेरणा मिली।

एक बार की बात है। मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ बाजार गई। हम सब दोस्तों ने प्लॉन बनाया एक मॉल में जाने का। हम सभी समय से तैयार होकर निकल पड़े उस मॉल में घूमने के लिए जिसके लिए हमने निर्णय लिया था। जब हम बाजार पहुँचे तो रास्ते में मैंने बहुत सारे छोट-छोटे दुकान देखे। मैंने अपने दोस्तों से कहा कि चलो न हम सब इन दुकानों पर भी कुछ देख लेते हैं । हो सकता है हम जो खरीदने आए हैं वो

यहाँ पर भी अच्छे दाम में मिल जाए। सब मान गए और हम उन सभी दुकानों में रखे सामानों को देखने लगे। तभी वहाँ एक व्यक्ति अपनी छोटी सी बच्ची को लेकर आया। देखने से ही वह व्यक्ति किसी अच्छे और सम्पन्न परिवार का लग रहा था। उसको देखकर यह साफ-साफ पता चल रहा था कि उसको उस दुकान से सामान खरीदने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वो बस अपनी बच्ची की जिद पर वहाँ आया था। उसकी बच्ची को उस दुकान पर एक फ्रॉक पसंद आ गई थी और वो उसी फ्रॉक को लेगी इसी जिद पर अड़ी थी लेकिन वो व्यक्ति बार-बार अपनी बच्ची को समझा रहा था कि बेटा, यहाँ पर आपके लायक कोई अच्छी चीज नहीं है, मैं आपके लिए किसी अच्छी जगह से या किसी अच्छे मॉल या शोरूम से कपड़े ले दूँगा।

अब आपको तो पता ही है बच्चे तो बच्चे ही होते हैं और उनके आगे किसी की नहीं चलती है। आखिर में उसने अपनी बच्ची की जिद के आगे हार मान ली और उसकी पसंद की हुई फ्रॉक को खरीदने का निश्चय किया। जब उसने दुकानदार से उसकी बच्ची द्वारा पसंद की हुई फ्रॉक की कीमत पूछी तो दुकानदार ने पाँच सौ रूपये बताया। इतना सुनते ही वो व्यक्ति गुस्से से आग बबूला हो गया और दुकानदार को दुनिया भर की बातें सुनाने लगा जैसे कि तुम जैसे छोटे दुकानदारों के बारें में मैं बहुत ही अच्छे से जानता हूँ। दो-दो सौ मे ये सब कपड़े यहाँ लाते हो और उसकी कीमत पाँच सौ, छः सौ करके बेचते हो। उस व्यक्ति ने दो चार जगह का नाम भी बता दिया जहाँ पर कपड़े सस्ते मिलते हैं। उसने ये भी कहा कि मैं तो किसी भी प्रकार के लोकल कपड़ो का प्रयोग ही नहीं करता हूँ, मैं तो हमेशा ब्रॉण्डेड सामान ही लेना पसंद करता हूँ, अरे मैं तो यह फ्रॉक अपनी बच्ची की जिद की वजह से खरीद रहा हूँ, ब्रॉण्डेड कपड़ों की तो बात ही अलग होती है आदि।

उसने और भी बहुत कुछ उस दुकानदार को सुनाया जो मैं यहाँ पर लिखना नहीं चाहूँगी क्योंकि इससे किसी व्यक्ति विशेष की स्थिति का अपमान होगा। इतना सब सुनने के बाद भी उस दुकानदार ने कुछ नहीं कहा क्योंकि वह एक छोटा सा दुकानदार था और वह जानता था कि अगर वह अपने ग्राहकों से बदतमीजीसे बात करेगा तो उसकी तो रोजी-रोटी ही बंद हो जाएगी। दुकानदार ने उस व्यक्ति को उसी के द्वारा तय की गई कीमत में फ्रॉक दे दिया। लेकिन जैसे ही वह व्यक्ति फ्रॉक लेकर अपनी बच्ची के साथ उस दुकान से गया दुकानदार ने वहाँ पर उपस्थित बाकी के ग्राहकों से कहना शुरू कर दिया कि ये वो लोग हैं जो हम जैसे छोटे दुकानदारों से तो बड़े जोश में बात करते हैं और मॉल या शोरूम में जाकर शांत हो जाते हैं। मॉल या शोरूम में ये लोग इसी सस्ते से फ्रॉक को ब्रॉण्ड के नाम पर हजारों में भी खरीद लेंगें। इतना कहने के बाद वो दुकानदार फिर से दूसरे ग्राहकों को सामान दिखाने में व्यस्त हो गया। हम सब दोस्त भी उन दुकानों में घूमने के बाद उस मॉल में गए जहाँ पर जाने का हमारा प्लॉन था। इत्तेफाक तो देखिए कि वो व्यक्ति भी अपनी बच्ची के साथ उसी मॉल में गया हुआ था। हम सब दोस्तों ने वहाँ से कुछ सामान खरीदा और बिल काउन्टर पर सामान का पेमेंट करने के लिए गए। वो व्यक्ति भी वहीं पर खड़ा था। उसने वहाँ से भी अपनी बच्ची के लिए एक कपड़ा लिय़ा था। हमलोगों से पहले वो वहाँ खड़ा था बिल कराने के लिए इसलिय उसकी बारी पहले आई। जब उसकी बारी आई तो उसने उस कपड़े की कीमत के बारे में वहाँ पर भी चर्चा की लेकिन उसकी बोलती को कैश काउन्टर वाले ने एक शब्द बोलकर बंद कर दिया ब्रॉण्डेड। उसने फिर से

काउन्टर वाले व्यक्ति से कहा कि आप इस कपड़े की कीमत इतना बता रहे हैं और अभी मैंने यहाँ आने से पहले इसी तरह का एक कपड़ा मात्र इतने में ही खरीदा है। इसपर उस काउन्टर वाले ने उसे बहुत ही अच्छे से समझाया कि सर, जो कपड़ा आप उस दुकान से खरीदे हैं वो ब्रॉण्डेड नहीं है और जो आपने हमारे यहाँ से खरीदा है वो ब्रॉण्डेड है, इसीलिए इतनी कीमत है इसकी। इतना सुनते ही वह व्यक्ति चुप हो गया और बिल का पेमेंट करने के बाद वहाँ से चला गया। हम सबने भी अपने-अपने सामान का बिल कराया और वापस चले आए।

जब मैं वापस घर आयी तो मेरे दिमाग में वो ही बात घूम रही थी। अगले दिन जब मैं अपने दोस्तों से मिली तो मैंने उन सबको अपनी भावनाओं के बारे में बताया। तो मेरे दोस्त भी मेरी बातों पर हँसने लगे और बोलने लगे कि ब्रॉण्डेड सामान तो आखिर ब्रॉण्डेड ही होता है। उसकी तुलना तुम लोकल सामान से कैसे कर सकती हो? ब्रॉण्डेड सामान लोकल की तुलना में ज्यादा आरामदायक और टिकाऊ होता है। मैं उनकी बातें सुनकर दंग रह गई और मैंने वहाँ पर चुप रहना ही बेहतर समझा। तब से मैं आज तक ये सोच रही हूँ कि क्या ब्रॉण्डेड वस्तुओं का इस्तेमाल करने के प्रति इंसान के सोचने का तरीका इतना बदल गया है कि वो किसी को भी कुछ बोलने से पहले सोच नहीं रहा है।

क्या ब्रॉण्डेड सामान ही हमारे जीवन का अब अभिन्न अंग बन के रह गया है। फिर मैंने सोचा नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है। किसी भी ब्रॉण्ड के जूते या कपड़े ये नहीं कहते हैं कि आप किसी की बेईज्जती करो या उसे नीचा दिखाओ। ये तो इंसान के उपर निर्भर करता है कि वो अपने आपको किसी के सामने कैसे पेश करता है। ये सब इंसान के अपने खुद के बनाए नियम है। ऐसे ब्रॉण्डेड कपड़ों या जूतों को पहनकर अच्छा दिखने क्या फायदा जब आप किसी को इज्जत नहीं दे सकते या किसी से दो शब्द प्यार से बात नहीं कर सकते। प्यार और इज्जत के हकदार तो हर कोई है न तो ऐसे ब्रॉण्डेड चीजों का इस्तेमाल करने वाले लोगों को किसने ये हक दे रखा है कि वो किसी की भी राह चलते बेइज्जती करें। अगर कोई व्यक्ति ब्रॉण्डेड कपड़े ही पहनता हो और दूसरों को हमेशा छोटा साबित करने कोशिश में लगा हो, उससे छोटा तो कोई हो ही नहीं सकता है।

सामान्य कपड़े और जूतों आदि का ही इस्तेमाल करें पर किसी को नीचे गिराने की कोशिश कभी न करें। जो सबको इज्जत और सम्मान देता है उसके द्वारा पहने गए लोकल कपड़े भी ब्रॉण्डेड की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाते हैं। जो सबको एक समान नजर से देखे असल में वो ही सबसे अच्छी ब्रॉण्ड के परिधान धारण किए होते हैं क्योंकि ऐसे ही लोगों की तारीफ उनके जाने के बाद भी होती है न कि उनकी जो अपने ब्रॉण्डेड चीजों के गुरूर में पूरी दुनिया को नीचा दिखाने की कोशिश में लगे रहते हैं। इस लेख को लिखने के पीछे मेरा मात्र एक ही उद्देश्य है कि कपड़े ही नहीं सोच भी ब्रॉण्डेड होनी चाहिए। बेशक कपड़े आप कैसे भी पहनें लोकल या ब्रॉण्डेड किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता, हाँ, लेकिन सोच को हमेशा ब्रॉण्डेड बनाए रखिए क्योंकि आपकी सोच के बारे में जिक्र आपके जाने के बाद भी हमेशा किया जाएगा।

# खानपान की बदलती तस्वीर

**श्री त्रिनाथ मल्लिक,**
लेखाकार

पिछले दश-पन्द्रह वर्षों में हमारी खान पान की संस्कृति में एक बड़ा बदलाव आया है। इडली, डोसा, बड़ा, साँभर, रसम अब केवल दक्षिण भारत तक ही सीमित नहीं हैं। ये उत्तर भारत के भी हर शहर में उपलब्ध है और अब तो उत्तर भारत की "ढाबा" संस्कृति लगभग पूरे देश में फैल चुकी है। अब आप कहीं भी हो, उत्तर भारतीय रोटी-दाल-साग आपको मिल ही जाएंगें। "फास्ट फूड" (तुरंत भोजन) का चलन भी बड़े शहरों में खूब बढ़ा है। इस फास्ट फूड में बर्गर, नुडल्स जैसी कई चीजें शामिल है।

एक जमाने में कुछ ही लोगों तक सीमित चाइनीज नूडल्स अब सम्भवतः किसी के लिए अजनबी नहीं रहे। टू मिनट्स नूडल्स के पैकेट बंद रूप से तो कम-से-कम बच्चे–बूढ़े सभी परिचित हो चुके हैं। इसी तरह नमकीन के कई स्थानीय प्रकार अभी तक भले मौजूद हों, लेकिन आलू-चिप्स के कई विज्ञापित रूप तेजी से घर-घर में अपनी जगह बनाते जा रहे हैं। गुजराती ढोकला-गाठिया भी अब देश के कई हिस्सों में स्वाद लेकर खाए जाते हैं और बंगाली मिठाइयों की केवल रसीली चर्चा ही नहीं होता, वे कई शहरों में पहले की तुलना में अधिक उपलब्ध है। यानी स्थानीय व्यंजनों के साथ ही अब अन्य प्रदेशों के व्यंजन-पकवान भी प्राय: हर क्षेत्र में मिलते हैं और मध्यम वर्गीय जीवन में भोजन-विविधता अपनी जगह बना चुकी है। कुछ चीजें और भी हुई है। मसलन अंग्रेजी राज तक जो ब्रेड केवल साहबी ठिकानों तक सीमित थी, वह कस्बों तक पहुंच चुकी है और नाश्ते के रूप में लाखों-करोड़ों भारतीय घरों में सेंकी-तली जा रही है।

खानपान की इस बदली हुई संस्कृति से सबसे अधिक प्रभावित नयी पीढ़ी हुई है, जो पहले के स्थानीय व्यंजनों के बारे में बहुत कुछ जानती है। स्थानीय व्यंजन भी तो अब घटकर कुछ ही ही चीजों तक सीमित रह गए हैं। बंबई की पाव-भाजी और दिल्ली के छोले-कुलचों की दुनिया पहले की तुलना में बड़ी जरूर है, पर अन्य स्थानीय व्यंजनों की दुनिया में छोटी हुई है। जानकार ये भी बताते हैं कि मथुरा के पेड़ों और आगरा के पेठे-नमकीन में अब वह बात कहां रही। यानी जो चीजें बची भी हुई है, उनकी गुणवत्ता में फर्क पड़ा है। फिर मौसम और ऋतुओं के अनुसार फलों-खाद्यान्नों से जो व्यंजन और पकवान बना करते थे, उन्हें बनाने की फुरसत भी अब कितने लोगों को रह गई है। अब गृहणियों या कामकाजी महिलाओं के लिए खरबूजे के बीज सुखाना-छीलना और फिर उनसे व्यंजन तैयार करना सचमुच दु:साध्य है। यानी हम पाते है कि एक ओर तो स्थानीय व्यंजन में कमी आई है, दूसरी ओर वे ही देशी-विदेशी व्यंजन अपनाए जा रहे

हैं, जिन्हें बनाने-पकाने में सुविधा है। जटिल प्रक्रियाओं वाली चीज तो कभी कभार व्यंजन पुस्तिकाओं के आधार पर तैयार की जाती है। अब शहरी जीवन में जो भागमभाग है, उसे देखते हुए यह स्थिति स्वभाविक लगती है। फिर कमर तोड़ महंगाई ने भी लोगों को कई चीजों से धीरे-धीरे वंचित किया है।

जिन व्यंजनों में बिना मेवों के स्वाद नहीं आता, उन्हें बनाने-पकाने के बारे में भला कौन चार बार नहीं सोचेगा। खानपान की जो एक मिश्रित संस्कृति बनी है, इसके अपने सकारात्मक पक्ष भी है। गृहणियों और कामकाजी महिलाओं को अब जल्दी तैयार हो जाने वाले विविध व्यंजनों की विधियां उपलब्ध हैं। नयी पीढ़ी को देश-विदेश के व्यंजनों को जानने का सुयोग मिला है भले ही किन्हीं कारणों से और किन्हीं खास रूपों में (क्योंकि यह भी एक सच्चाई है कि ये विविध व्यंजन इन्हें निखालिस रूप में उपलब्ध नहीं है)।

आजादी के बाद उद्योग-धंधों, नौकरियों-तबादलों का जो एक नया विस्तार हुआ है, उसके कारण भी खानपान की चीजें किसी एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुंची है। बड़े शहरों के मध्यम वर्गीय स्कूलों में जब दोपहर के ''टिफिन'' के वक्त बच्चों के टिफिन डिब्बे खुलते हैं तो उनसे विभिन्न प्रदेशों के व्यंजनों की एक खुशबू उठती है। हम खानपान से भी एक-दूसरे को जानते हैं। इस दृटि से देखें तो खानपान की नयी संस्कृति में हमें राष्ट्रीय एकता के लिए नए बीज भी मिल सकते हैं। बीज भलीभांति तभी अंकुरित होंगे जब हम खानपान से जुड़ी हुई दूसरी चीजों की ओर भी ध्यान देंगे। मसलन हम उस बोली-बानी, भाषा-भूषा आदि को भी किसी न किसी रूप में ज्यादा जानेंगे, जो किसी खानपान-विशेष से जुड़ी हुई है।

## सुक्तियाँ

ह्रदय की विशालता ही उन्नति की नीव है।

*-जवाहर लाल नेहरू*

जहां सब एक हैं वहां सबकुछ अपने आप खिंचकर चला आता है। एकता सर्वदात्री है।

*-मनुस्मृति*

सबको हाथ की पाँचों उँगलियों की तरह रहना चाहिए। ये हैं तो पाँच लेकिन काम सहत्रों का कर लेतीं हैं, क्योंकि इनमें एकता है।

*-विनोबा भावे*

जैसे एक छोटा सा कंकण सरोवर में हलचल कर देता है, उसी प्रकार एक साधारण सा अवगुण सभी गुणों को कम्पायन कर देता है। नन्हीं चिंगारी सारा जंगल भस्म कर देती है।

*-विदुर*

कटु वचन वाण से भी गहरा घाव करते हैं।

*-शाल्य देव*

# नैतिक मूल्य और आध्यात्मिकता का महत्व

**श्री सुकांत कुमार महांति,**
सहायक लेखा अधिकारी

व्यक्ति के जीवन में नैतिक मूल्यों का बड़ा महत्व होता है। नैतिक शिक्षा मनुष्य के जीवन में बहुत आवश्यक है। इसका आरंभ मनुष्य के बाल्यकाल से ही हो जाता है। अपने हितों के रक्षा के साथ दूसरों के हितों, अधिकारों व दृष्किोण का भी ख्याल रखना चाहिए। दुनिया में शांति, अहिंसा, सहनशीलता, भाईचारा का संदेश फैलाना चाहिए। सभी पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं के प्रति करूणा की भावना रखनी चाहिए। सब पर दया करना, कभी झूठ नहीं बोलना, बड़ों का आदर करना, सच बोलना, सबको अपने समान समझते हुए अनसे प्रेम करना, सबकी मदद करना, किसी की बुराई न करना आदि कार्य नैतिक शिक्षा या नैतिक मल्य कहलाते हैं।

नैतिक मूल्यों के अभाव के कारण व्यक्ति के चरित्र में गिरावट आती जा रही है, आज अपराधों का ग्राफ हर वर्ष बढ़ता जा रहा है। चोरी, डकैती, हत्याएं इसलिए हो रही हैं कि व्यक्ति स्वयं के जीवन में उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों को स्थान नहीं दे पा रहा है। बच्चों में नैतिक मूल्यों का भी निर्माण करने की जिम्मेदारी माता-पिता, परिवार, स्कूल एवं समाज की है। आज के बच्चे ही कल के भविष्य हैं, अतः शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों को भी जीवन में स्थान दें। नैतिक मूल्यों को शिक्षा में इस तरह शामिल करना होगा जिससे विभिन्न पाठ्यक्रमों में, कार्यशालाओं व गतिविधियों में इन नैतिक मूल्यों का संदेश सहज, सरल व रोचक तौर तरीकों से विद्यार्थियों तक पहुँचे। इसके लिए अच्छे साहित्य, फिल्मों, आडियो-विडियो सामग्री आदि का सहारा लिया जा सकता है। यदि जीवन में शिष्टाचार, सदाचार, अनुशासन, मर्यादा है तो परिवार और देश में शांति रहेगी।

आज मनुष्य अत्याधिक भौतिकवादी तथा लालची हो गया है। बलिदान, त्याग, संतोष, प्रज्ञा, लोकतीत-अनुभूति, मुक्ति तथा मोक्ष जैसे शब्द जो कि अध्यात्मिक मूल्यों के द्योतक हैं, हमारे शब्दकोश से लुप्त हो चुके हैं। व्यापक उपभोगवादी संस्कृति तथा भोग-विलास से पोषित भौतिकवाद ने हमारी अध्यात्मिक चेतना पर पर्दा डाल दिया है। धन-अर्जन, सत्ता तथा प्रसिद्धि की लालसा और सुखवादी जीवन प्रणाली आज जीवन का परम लक्ष्य बन चुका है। सभी धर्मों ने लालच को महापाप कहा है। परन्तु आज लालच ही मुख्य प्रेरणा-द्वार है। लालच ही हमारी इस धरती के दुर्लभ संसाधनों को लूट रहा है तथा समस्त मानव-जाति को पर्यावरणीय विनाश के कगार की ओर ले जा रहा है। यह समस्या भारत में ही नहीं बल्कि पाश्चात्य देशों में भी भयंकर हो चुकी है और यही युवा यदि देश के कर्णधार बनेंगें तो मानवीय और सामाजिक मूल्यों का विनाश हो जाएगा। धर्म का उचित रूप से अनुसरण करने से ही व्यक्ति इन कलुषित संस्कारों से मुक्त हो सकता है।

अतः धर्म को एक बाधक के रूप में नहीं बल्कि एक स्वच्छ माध्यम के रूप में हम सबको अपनाना होगा। अध्यात्मवाद धर्म के उचित पालन करने से ही विस्तृत होगा, इसके दुरूपयोग से नहीं।

# द्वारका यात्रा वृतांत

**श्री चार ओराम,**
सहायक लेखा अधिकारी

चुँकि हमें छुट्टी यात्रा रियायत पर जाना था इसलिए द्वारका का टिकट 2 महिने पहले ही कर लिया था। हमारी फ्लाईट एयर इण्डिया की थी जो भुवनेश्वर-मुम्बई तथा मुम्बई-अहमदाबाद के लिए थी। हमने हमारे शाखा अधिकारी श्री रमाकान्त नायक जी के परिवार के साथ घुमने की योजना बनाई थी। मुम्बई पहुँचने पर हमें काफी समय मिला कि दूसरी फ्लॉईट के लिए बोर्डिंग करें। अतः हमने मुम्बई में मरीन ड्रॉइव कि ओर घुमने गए। करीब दो घंटे बिताने के बाद बापस मुंबई एयरपोर्ट आए।

मेरी जुड़वा बेटियाँ इण्डिगो फ्लाईट में अहमदाबाद पहुँचे। हमसे मुलाकात वहाँ करने के बाद छोटी बेटी जो अहमदाबाद में ठहरी है अपनी नौकरी के सिलसिले में वह हमसे मुलाकात की और हमने एक साथ मिल के द्वारका के लिए गुजरात रोड ट्रान्सपोर्ट बस से रवाना हो गए। दूसरे दिन सुबह पहुँचने के बाद अपना नित्यकार्य करके, नास्ता वैगरह ले के प्रभु के दर्शन हेतु द्वारका के लिए निकल पड़े जो समंदर से लग के स्थित है। वहाँ अच्छी तरह दर्शन करने के बाद अपना मध्यान भोजन लिए और वापस अपने होटल में पहुँचे। उसी दिन शाम को आस-पास के छोटे-छोटे मंदिरों के दर्शन के लिए निकले। फिर वापस आके अपने होटल में रात्री यापन किया दूसरे दिन सुबह हमने अच्छी तरह दर्शन करने के बाद अत्यंत खुश थे क्योंकि हम जिस जिस के दर्शन के लिए आए थे अधीर संतुष्टि मिली। वहाँ हमें सबसे अच्छा यह लगा कि हमारे ओड़िशा के लोग ज्यादातर दर्शालु और भक्तगड़ थे। उसी के प्रबल से ओड़िशा के खान-पान भी मिल जाते हैं। फिर हम अपना नास्ता ले के करीब 10.30 बजे सोमनाथ मंदिर के लिए निकल पड़े जो वहाँ से लगभग 350 कि.मी. है। हमने जाते समय रास्ते में छोटे-छोटे मंदिरों का दर्शन किए। आखिर शाम पाँच बजे सोमनाथ मंदिर का दर्शन खूब अच्छी तरह से हुआ। दर्शन के बाद हमने रात्रि भोजन करके वहाँ से वापस अहमदाबाद के लिए निकल पड़े। फिर दूसरे सुबह करीब 5.30 को ईस्कान मंदिर चौक से महसाना की ओर चल पड़े जहाँ मेरी छोटी बेटी ने किराए पर ली थी।

वहाँ पहुँचने के बाद हम फ्रेश होकर अपनी मनचाही चावल का भोजन प्रस्तुत करके संतुष्टी से आराम किया। दूसरे दिन फिर 2 मारूती इको गाड़ी लेकर हम निकल पड़े राजस्थान के लिए वहाँ हमने भरपूर मजा लिया और आनंद से भर उठे। हमने चुँकि होटल बुक नहीं किया था वापस महसाना के लिए निकल पड़े। करीब 10 बजे रात को हम पहुँच गए। रात्रि जापन करके दूसरे दिन के लिए पूरे दिन सैलेजा सरनम जहाँ मेरी बेटी ठहरी हुई है, वहाँ बिताए। फिर हम मॉउंट आबु के दर्शन के लिए निकले। चुँकि दिपावली का त्योहार चल रहा था इसलिए बहुत भीड़ थी। हमने वहाँ का मजा लिया और लुत्फ उठाए अत्यंत आनंद के साथ छुट्टी यात्रा रियायत का समापन करने वापस एयर इण्डिया फ्लॉईट में प्रत्यावर्तन किया।

# भारत के नियंत्रक-महालेखा परीक्षक : कुछ बातें

**श्री पुरूषोत्तम नंद,**
सहायक लेखा अधिकारी

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक भारतीय संविधान के अध्याय 6 द्वारा स्थापित एक प्राधिकारी है जो भारत सरकार तथा सभी प्रादेशिक सरकारों के सभी तरह के लेखों का अंकेक्षण करता है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 149 के प्रावधान के अंतर्गत संसद ने 1971 में एक विस्तृत कानून बनाया जिसे सी.ए.जी. के डी.पी.सी. (कर्तव्य, शक्तियां एवं सेवा शर्तें) अधिनियम के रूप मे जाना जाता है। सी.ए.जी. को स्वतंत्रता एवं निष्पक्षता को सुनिश्चित करने के लिए इस अधिनियम में सेवा की शर्तें निर्धारित की गई है।

जैसा कि डी.पी.सी. अधिनियम 1971 में परिभाषित किया गया है, सी.ए.जी. का कर्तव्य निम्न प्रकार के लेखा परीक्षा एवं रिपोर्ट करना है।

* संघ एवं राज्य सरकारों की तिजोरियों में समस्त प्राप्तियों एवं उन से किया गया व्यय
* केन्द्र तथा राज्य स्तर पर आपातकालीन व्यय से संबंधित तथा सरकार द्वारा धारित सार्वजनिक धन जैसे डाक बचत, विकास पत्र आदि संबंधित समस्त लेन देन
* किसी भी सरकारी विभागों में रखे गए समस्त व्यापार, निर्माण, लाभ एवं हानि लेखे तुलना पत्र एवं अन्य सहायक लेखे
* सभी सरकारी कार्यालयों तथा विभागों के समस्त भंडार एवं स्टॉक लेखे
* सरकारी धन प्राप्त करने वाले सभी स्वायत्त निकायों तथा प्राधिकरणों जैसे नगर निगम, आइ.आइ.एम., आइ.आइ.टी. लेखे
* राष्ट्रपति/राज्यपाल के अनुरोध पर अथवा सी.ए.जी. की पहल पर किसी निकाय अथवा प्राधिकरण के लेखे
* किसी कार्यालय अथवा संगठन क लेखापरीक्षा के निरीक्षण का अधिकार किसी भी अभिलेख, कागज, दस्तावेज मंगवाने का अधिकार
* लेखापरीक्षा किस ढंग से और कितने व्यापक रूप में की जाएगी इस पर निर्णय लेने का पूर्ण अधिकार

सी.ए.जी. के द्वारा निम्नलिखित संगठनों की लेखापरीक्षा की जाती है :

* संघ एवं राज्य सरकार के सभी विभाग जिनमें भारतीय रेल, रक्षा तथा डाक एवं दूरसंचार आदि शामिल हैं।
* संघ एवं राज्य सरकारों द्वारा नियंत्रित सभी सार्वजनिक वाणिज्यिक उद्यम अर्थात सरकारी कंपनियों एवं निगम

*　संघ एवं राज्य द्वारा नियंत्रित अथवा उनके स्वामित्व वाले गैर वाणिज्यिक उद्यम
*　संघ अथवा राज्य से पर्याप्त मात्रा में वित्तपोषित निकाय तथा पंचायती राज संस्थान जो विकासा_त्मक कार्यक्रम तथा सेवाएं प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण एजेंसियां हैं।

अब तक नियंत्रक महालेखा परीक्षकगण :-

1. श्री नरहरी राव (1948 से 1954 तक)
2. श्री ए.के. चंद्रा (1954 से 1960 तक)
3. श्री ए.के. राय (1960 से 1966 तक)
4. श्री एस. रंगनाथन (1966 से 1972 तक)
5. श्री ए. बक्शी (1972 से 1978 तक)
6. श्री ज्ञान प्रकाश (1978 से 1984 तक)
7. श्री टि.एन. चतुर्वेद (1984 से 1990 तक)
8. श्री सी.जी. सोमैया (1990 से 1996 तक)
9. श्री वी.के. शुंगूलू (1996 से 2002 तक)
10. श्री वी.एन. कौल (2002 से 2008 तक)
11. श्री विनोद राय (2008 से 2013 तक)
12. श्री शशिकान्त शर्मा (2013 से 2017 तक)
13. राजीव महर्षि (25 सितंबर 2017 से ...........)

सी.ए.जी. को स्वतंत्र एवं निष्पक्ष करने के लिए संविधान में निम्नलिखित प्रावधान हैं।

*　भारत के राष्ट्रपति द्वारा सी.ए.जी. की नियुक्ति
*　सी.ए.जी. को हटाने के लिए विशेष प्रक्रिया
*　सीएजी के वेतन एवं व्यय भारित है।
*　सी.ए.जी. अपने कार्य अवधि की समाप्ति के पश्चात कोई अन्य सरकारी पद धारण नहीं कर सकता।

# मेरी तमन्ना

**श्रीमती शांति लता सेठी,**
वरिष्ठ लेखाकार

एक दिन मैं दफ्तर से लौट रही थी, मेरी बचपन की सहेली उर्मी से मेरी मुलाकात हो गई। उसका मुर्झाया हुआ चेहरा देख कर मैं बोली, "क्या हुआ है?" इतनी दुःखी क्यों लग रही हो? घर में सब ठीक है? उर्मी बोली तेरे जीजा जी को तो जानती ही हो, आशा इतनी अच्छी पढ़ाई कर रही है। +2 विज्ञान में 95% नंबर से पास की। फिर राऊरकेला में NIIT पाकर कंप्यूटर में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रही है। फिर भी तेरे जीजा जी आशा की शादी के लिए लड़का ढूढना शुरू कर दिए हैं। मैं उर्मी को बोली देखो उर्मी, तुम्हारा जीवन तुम्हारे पिता जी बर्बाद कर दिए हैं। तुम पढ़ाई में कितनी अच्छी थी। अब वही कहानी तुम्हारे घर में फिर दोहराना नहीं चाहिए। अब तुम तो आवाज निकालो तुम्हारी बेटी के लिए। उर्मी रो पड़ी और बोली कि जीजा जी से वह बात नहीं कर पाएगी। जीजा जी के सामने वह लाचार है। जीजा जी के मर्जी के हिसाब से हम माँ-बेटी दोनो चल रहे हैं। मैं थोड़ा गुस्सा होकर बोली कि तुम्हारा कुछ नहीं हो सकता है। लेकिन थोड़ा साहसी बनकर जीजा जी से बात करो और बोलो कि आशा नौकरी करने के बाद ही शादी करेगी। तुम आशा की माँ हो, तुम्हारी भी जिम्मेदारी है। तुम चाहो तो आशा की तकदीर बदल सकती है। ऐसे बातचीत करते हुए हम दोनों मॉल से बाहर आए और अपने-अपने घर चले गए।

मेरी बात सुनकर उर्मी मन में थोड़ा साहस जुटाई और घर जाकर जीजा जी से बात की। लेकिन जीजा जी बोले कि ये तुम्हारी आवाज नहीं है, यह तुम्हारी सहेली की आवाज है। आज उनके घऱ सलाह लेने के लिए गई थी क्या? उर्मी बोली बार-बार मेरी सहेली को बीच में क्यों ला रहे हो? वह नौकरी करती है इसलिए। जीजा जी और उर्मी के बीच में वाकयुद्ध शुरू हो गया लेकिन कुछ नहीं हुआ पढ़ाई खत्म होने के बाद आशा की शादी एक बड़े घर के लड़के से हो गई। लड़का बहुत सुन्दर था। वह भी मुंबई में मैकेनिकल इंजीनियर है। करोड़पति बाप का एकलौता बेटा। जीजा जी के दोस्त का बेटा। इसलिए उर्मी चुप रही। अच्छे घर में हमारी बेटी खुश रहेगी। उर्मी मुझे ये सब सुनाने के लिए फोन की। मैंने कहा क्या वाकई ! मैं बोली जो भगवान की मर्जी चलो ठीक है हम लोगों को शादी पर बुला रही हो कि नहीं। उर्मी बोली हाँ, हम दोनों जाएंगें। एक सप्ताह के बाद जीजा जी और उर्मी हमारे घर आए और आशा के बारे में बातचीत हुई। शादी का एक और कारण था वह था आशा की खूबसूरती। आशा देखने में बहुत सुन्दर थी।

इसलिए जीजा जी साथ में बेटी को जब कालेज ले जाते थे तो लड़के लोग कुछ न कुछ कमेंट कर ही देते थे। इसलिए उन्होंने पढ़ाई खत्म होने के बाद जल्दबाजी में शादी का फैसला ले लिया था। सबकी रजामंदी से शादी हुआ और अपने माता-पिता को छोड़कर आशा ससुराल चली गई। आशा का ससुराल भुवनेश्वर में है। उर्मी ने भी भुवनेश्वर में शास्त्रीनगर में एक फ्लैट लिया था। इसलिए मैंने सोचा आशा को कोई तकलीफ नहीं होगा। कुछ महीनों बाद आशा के सास-ससुर आशा को अपने बेटे के पास मुंबई में छोड़ आए। दोनों की जोड़ी बहुत सुन्दर थी।

जब आशा मुंबई चली गई जीजा जी घर आकर बहुत रोए। तब उर्मी को पता चला कि जीजा जी उर्मी से कितना प्यार करते थे। हर रोज शाम को आशा के साथ बात कर रहे थे। उर्मी भी सबकुछ भूल गई और जब जी करता था उर्मी के पास जाकर घूम आती थी। कुछ साल तक आशा और दामाद के बीच अच्छा संबंध रहा। जरूरत से ज्यादा पैसा हो जाने से खर्च करने के लिए दामाद के बहुत सारे दोस्त हो गए थे। दामाद बेटी को अकेले रात में छोड़कर डिस्कोनाईट बार में रात गुजारने लगा। हर रोज रात को नशे में आने लगा। आशा एक दिन उनसे पूछी कि आप इतनी रात को क्यों आ रहे हो? मुझे अकेले यहाँ डर लग रहा है। दामाद बोले कि तुम क्या अकेली सुन्दरी हो चलो हटो, बार में कितनी सुंदर लड़कियाँ मेरे गले पड़ी रहती हैं।

इस तरह आशा की जिंदगी के साथ दामाद खेलने लगा। एक दिन सुबह आठ बजे दामाद के मोबाईल पर एक काल आया उस वक्त दामाद जी गहरी नींद में खर्राटे ले रहे थे। आशा ने चुपचाप फोन उठाया और उनके ड्राईवर को बात करने के लिए बोला। ड्राईवर को सब पता था। आशा ने फोन का स्पीकर ऑन कर दिया। फोन की बात अच्छे से सुनाई दी। एक लड़की की आवाज थी। वह बोल रही थी कि कल क्यों नहीं आए बेटा तुम्हें ढूँढ रहा है। सुबह से रो रहा है। चुप नहीं हो रहा है। ड्राईवर भी मुश्किल में पड़ गया। आशा का सपना चकनाचूर हो गया क्योंकि उसी समय वह भी माँ बनने वाली थी। जब पता चला कि आशा माँ बनने वाली है तो दामाद जी उसे भ्रूणहत्या के लिए मजबूर किया। लेकिन आशा नहीं मानी। आशा बोली तुम्हारी मर्जी जो कुछ करो मैं कुछ नहीं बोलूँगीं। किसी से शिकायत नहीं करूँगीं। बच्चे होने तक मुझे यहाँ रहने दीजिए। मेरी माँ को कुछ पता नहीं चलना चाहिए। आशा की बात सुनकर दामाद जी को थोड़ा और आजादी मिल गई। वह नौकरानी को घर में रखा और दूसरी बीवी के साथ रहने लगा। मानसिक अशांति के कारण आशा की तबीयत बिगड़ने लगी। नौकरानी ने मालकिन की हालत देखकर आशा की माँ को फोन लगाया और सबकुछ बता दिया। आशा के पिता जी बोले यह बात मुझे पहले क्यों नहीं बताया गया।

अब तक आपने अपना फर्ज अदा किया अब मेरी बारी। उर्मी और जीजा जी के बीच में अपनी जवानी के बीच का चर्चा शुरू हो गया। उर्मी बोली मुझे कल मेरी बेटी के पास ले चलो। उर्मी जोर-जोर से रोने लगी। उर्मी को जीजा जी ने बोला कि हम पाँच तारीख को मुंबई जा रहे हैं। दामाद से बात करके आशा को ले आएंगें। उर्मी और जीजा जी आशा के पास पहुँचकर देखे कि आशा अकेली रह रही है। उर्मी ने जीजा जी को बोला कि फोन लगाकार दामाद जी को बुलाईए। जीजा जी फोन किए तो फोन बज रहा था लेकिन कोई फोन उठा नहीं रहा था। दामाद जी ने जो ड्राईवर आशा के लिए रखा था वह बहुत अच्छा आदमी था। वह यह सब देखकर आशा के माँ-पापा को उनके दामाद की दूसरी पत्नी के घर पहुँचा दिया। दामाद घर पर नहीं था। उसकी दूसरी पत्नी बनीता दो साल के बच्चे को लेकर दरवाजा खोली। बनीता से पूछा अंशुमान (दामाद का नाम) घर पर है? बनीता बोली नहीं हैं, वह सब्जी लाने के लिए बाजार गए हैं। जीजा जी पूछे कि आप उनकी क्या लगती है? वह बोली कि मैं उनकी पत्नी हूँ। यह सुनकर जीजा जी और उर्मी वहाँ से चले आए और आशा को भुवनेश्वर साथ में लाने के लिए सोचने लगे। लेकिन आशा ने मना कर दिया। आशा बोली कि आप लोग जाइए मेरा थोड़ा काम है। खत्म करके मैं आऊँगी।

आशा जो हाल में थी उस हाल ने उसे बहुत ही मजबूत बना दिया था। जीजा जी और उर्मी घर लौट आए थे। वो अपनी इकलौती बेटी की इस हालत को देखकर टूट गए थे। उनलोगों ने आशा के ससुराल जाकर सबकुछ बता दिया लेकिन फिर भी कुछ समाधान नहीं हो पाया। बाद में आशा के पिता जी बेटी को तलाक देने को बोले। आशा अपने पति को बुलाकर म्युच्युल तलाक लेने की बात बोली। उसका पति अंशुमान वही तो चाहता था।

वह तुरन्त राजी हो गया। आशा ने कोई तकरार लेने की नहीं सोच रही थी ताकि उसके पेट में जो बच्चा पल रहा था उसपर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़े उसने सोचा जो आदमी प्यार का मोल नहीं दे पाया उसके पास रहने से कोई फायदा नहीं है। आशा म्यूच्यूल तलाक लेकर अपने पिता के घर भुवनेश्वर वापस आ गई और तीन महीने बाद एक बेटे को जन्म दिया। वह अपने माता-पिता के पास खुशी से रहने लगी।

लेकिन दो साल के बाद जीजा जी का दिल का दौरा पड़ने से देहांत हो गया। आशा के उपर फिर जिम्मेदारी आ गई लेकिन आशा अपनी माँ के साथ अपने बेटे को लेकर खुशी से रही। उसका बेटा जब चार साल का हुआ तो डीएभी यूनिट आठ में दाखिला करा दिया। अपने पिता जी के दफ्तर में उसको नौकरी मिल गई। अच्छे से अपने माँ और बेटे को लेकर रहने लगी। लेकिन पता नहीं उसको किसकी नजर लग गई। एक लड़का प्रसान्त आशा के पीछे पड़ गया और आशा को बोला कि मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ। तुम्हारे बेटे को पिता का नाम दूँगा। आशा ने मना कर दिया लेकिन उस लड़के ने नहीं माना।

वह एक दिन आशा के घर आशा की माँ से मिलने आया। जब उसने आशा के घर का दरवाजा खटखटाया तो दरवाजा आशा के लड़के ने खोला और दरवाजा खोलते ही बोला माँ, डैडी आए हैं। यह सुनकर प्रसान्त बहुत ही खुश हो गया। उसको लगा शादी पक्का हो गया। आशा ने जब अपने बेटे के मुँह से डैडी शब्द सुना तो वह चौक गई और जब आकर देखी तो प्रसान्त आया था। उसने पूछा यहाँ क्यों आए हो? प्रसांत ने आशा के बेटे को गोद में उठाया और बोला एक को बाप मिल गया, तुम इतने से खुश नहीं हो। आशा बोली लड़के लोगों से मेरा भरोसा उठ गया है। मैं अकेली माँ और बाप का काम कर सकती हूँ। मुझे किसी की जरूरत नहीं है। आप यहाँ से चले जाईए। वह बोला ठीक है, मैं चला जाता हूँ। प्रसांत ने आशा के बेटे को गोद से नीचे जैसे ही उतारा वह जोर-जोर से रोने लगा और कहने लगा कि नहीं, मेरे डैडी कहीं नहीं जाएगें। स्कूल में सबके डैडी आते हैं। लेकिन मेरे पापा नहीं आते हैं। मेरे डैडी मेरे पास रहेंगें।

नाती का चिल्लाना सुनकर उर्मी बाहर आई और पूछी यह लड़का कौन है? आशा बोली ये प्रसांत हैं और यहीं होंडा कंपनी में नौकरी करते हैं। यह मुझसे शादी करना चाहता है। उसी समय उसका बेटा बोला, नानी, देखो ना मम्मी डैडी को भगा रही है। आप उनसे कहो ना डैडी यहीं रहेगें। आशा ने अपने बेटे की ऐसी हालत पहले कभी भी नहीं देखी थी। उर्मी भी चौक गई। उर्मी प्रसान्त को पूछी कि तुम आशा के बारे में क्या जानते हो? आशा की माँ ने प्रसांत से उसके मां-बाप और घर- परिवार के बारे में भी पूछा। प्रसान्त ने बताया कि वह अपने माँ-बाप का इकलौता लडका है और उसका घर भुवनेश्वर से 150 किलोमीटर दूर है। उसके माता-पिता शहर के लोगों के जैसे नहीं हैं। थोड़ा कंजर्वेटिव प्रकार के हैं। परन्तु बहु बड़ी घर की है यह सुनकर राजी हो गए। दोनों तरफ से बातचीत हुई और एक शर्त पर शादी हुई दूसरा बच्चा आशा पैदा नहीं करेगी। इस बात पर भी सब राजी हो गए। फिर धूम-धाम से शादी हो गई। आशा को इतना प्यार करने वाला पति और बेटे को इतना स्नेह देने वाला एक पिता मिल गया और क्या चाहिए एक साल तक किसी को मालूम नहीं पढ़ा कि प्रसान्त कितना बुरा इंसान है।

एक दिन वह आशा को अपने गाँव ले गया। गाँव में मिट्टी का घर था उसका और शौचालय की भी व्यवस्था नहीं थी इसलिए आशा ने रात को रूकने से मना कर दिया। फिर और भी एक कारण है अपने पिता के देहांत के बाद वह अपनी माँ को अकेले नहीं छोड़ सकती थी। इस बात को लेकर दोनों के बीच झगड़ा हो गया। रात को दोनों भुवनेश्वर आ गए। प्रसांत अकेले में उससे कुछ बात करना चाहता था। आशा ने भुवनेश्वर में एक होटल

में एक रूम बुक किया और दोनों एक साथ रात गुजारे। प्रसांत ने आशा से एक बच्चे जन्म देने की माँग की लेकिन आशा ने मना कर दिया। उस दिन से प्रसांत का असली रूप बाहर आने लगा।

एक दिन वह शराब पीकर घर पहुँचा अपने गंदे इरादों के बारे में आशा को बताने लगा। वह बोला कि मैं तुमसे नहीं, तुम्हारी गाड़ी, बंग्ले और सम्पति से प्यार करता हूँ। तुम तो एक शादीशुदा औरत हो उसपर से एक बेटे की माँ भी तुमसे क्या खुशी मिलेगी मुझे। यह सुनकर आशा और आशा की मम्मी को बहुत धक्का लगा और उनलोगों ने उसे घर से बाहर निकाल दिया। लेकिन जैसे ही शराब का नशा उतर गया उसका होश ठिकाने आ गया। वह फिर सुबह-सुबह आकर उर्मी के पैर पकड़कर रोने लगा। मुझसे ऐसी गलती दुबारा नहीं होगी। आशा का बेटा प्रसांत को अपना पिता मान लिया था। वह मन ही मन खोज रहा था बोल रहा था डैडी क्यों नहीं आ रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर उसे अपने बेटे को न देना पड़े इसलिए उसने प्रसांत को माफ कर दिया।

ऐसे ही महीनों चलता रहा। आशा सोचने लगी प्रसांत बदल गया है। प्रसांत ने एक कार खरीदने की बात चलाई। आशा बोली ठीक है, हम लोगों को आने-जाने में तकलीफ होती है एक कार खरीद लेते हैं। इसलिए एक होण्डा सिटी कार लोन पर ले लिया। आशा की मम्मी को रू.300000/- जमा करना पड़ा और गारेंटर भी आशा की मम्मी को ही बनना पड़ा। जैसे "प्रकृति नैब मोच्यते यद्येत्र मोच्यते सनै-सनै" वैसे ही प्रसांत की प्रकृति भी कुछ दिन के लिए बदला था। लेकिन उसके मन में कुछ और चल रहा था। कैसे आशा का घर अपने नाम पर करेगा ऐसी घटिया सोच बहुत जल्द बाहर आ गई। आशा ये बात नहीं मानी उसने साफ-साफ इनकार कर दिया। प्रसांत ने एक दिन सबके साथ इस बारे में बात की लेकिन अपनी मंजिल पर पहुँचने से चूक गया। इस वजह से वह भड़क गया और आशा के साथ रिस्ता तोड़ने की धमकी देने लगा। उसकी इतनी सारी बात सुनकर आशा ने एक झाड़ू उठाया और उसको पिटने लगी। उसका सारा सामान बाहर फेंक दिया और बोली कि इस बार तुम्हें माफी नहीं मिलेगी। मेरी नजर के सामने से जल्दी से चले जाओ। प्रसांत अपना सामान लेकर कार में चला गया और अबतक नहीं लौटा। लेकिन कार का जो रू.300000/- जमा हुआ था वो वापस नहीं मिला है। इतना बड़ा रकम वापस नहीं मिलने के बाद भी आशा और उर्मी दुःखी नहीं है। वो दोनों इस बात से खुश हैं कि उन्हें मानसिक अशांति से मुक्ति मिल गई। आजकल दुनिया में किसके उपर भरोसा करें।

माता-पिता की पसंद से शादी की तो भी धोखा मिला और अपनी पसंद से की तो भी। ऐसी समस्या का समाधान केवल अपनी बुद्धि और विवेक से ही हो सकता है। आशा ने अपने आपको मजबूत कर लिया है। अपने बेटे को कार में बैठा कर स्कूल छोड़ती है अपने दफ्तर जाती है। जब आशा से मेरी मुलाकात होती है। मैं ये बात बोलती हूँ कि आशा तुम नई पीढ़ी की नई आशा हो। मुसीबत में लड़ना कोई तुमसे सीखे। हम सबकी दुआ तुम्हारे साथ है ऐसे ही आगे बढ़ो। आशा थोड़ी सी मुस्कान देकर बोलती है जी आन्टी।

मैं आप लोगों से पूछती हूँ कि आशा की क्या गलती थी? पिता की बात मानकर शादी की, वहां प्यार के बदले धोका मिला, अपने बेटे को बाप का नाम देने के लिए एक बार फिर शादी की वह भी धोखेबाज निकला। आशा के जीवन में जो भी घटनाएँ घटी उसके लिए जिम्मेदार कौन है?

# मायापुरी

**सुश्री सोनी कुमारी साव,**
डीईओ

मायापुर नाम से ही प्रतीत होता है मायापुर माया नगरी है, यहाँ के वातावरण में एक अद्भुत सौन्दर्य है, जो लोगों को अपने सौन्दर्य वातावरण से आकर्षित करता है। मायापुर पश्चिम बंगाल के नदिया जिले में गंगा नदी के किनारे, उसके नलांगी नदी से संगम के बिंदु पर बसा हुआ एक छोटा सा शहर है। यह नवद्वीप के निकट है। यह कोलकाता से 130 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। यह हिंदू धर्म के गौड़ीय बैष्णव संप्रदाय के लिए अति पावन स्थल है। यहां उनके प्रवर्तक श्री चैतन्य महाप्रभु का जन्म हुआ था। उन्हें श्रीकृष्ण एवं श्री राधा का अवतार माना जाता है। यहाँ लाखो श्रद्धालु तीर्थयात्री प्रत्येक वर्ष दर्शन हेतु आते हैं। यहाँ इस्कान समाज का बनवाया एक मंदिर भी है। इसे इस्कान मंदिर मायापुर कहते हैं।

मायापुर में अलग-अलग मंदिर भी है और प्रत्येक मंदिर की अपनी अलग-अलग सौन्दर्य और गरिमा भी। मायापुर का एक महत्वपूर्ण मंदिर है जिसमे श्रीकृष्ण और राधा जी की भव्य मूर्ती स्थापित है। यह मूर्ति बेहद भव्य और सुंदर है। यहाँ दिन में तीन बार आरती होती है जिसमें बहुत भीड़ होती है। भक्त यहाँ श्री कृष्ण की भक्ति में मग्न होकर नाचते और गाते हैं तथा उस वातावरण का लुत्फ उठाते हैं। यहाँ का भोग यानि प्रसाद काफी स्वादिष्ट होता है जिसे खाकर मन को तृप्ति मिल जाती है।

यहाँ हमें हाथी, घोड़ा सभी चीज देखने को मिलती है। यहाँ गाय अधिक मात्रा में पायी और पाली जाती है। यहाँ गाय के लिए मायापुर मंदिर में कुछ दूर में गौशाला का निर्माण कराया गया है। यहाँ गाय के दूध से दही, मक्खन, घी, मिठाईयाँ आदि बनाया जाता है और उसके गोबर से गैस बनाया जाता है जिसे ईंधन के रूप में प्रयोग कर उसपे भोग और प्रसाद आदि पकाया जाता है। यहाँ के व्यंजन में देसी घी का प्रयोग करते हैं जिसके कारण यहाँ का भोजन बहुत ही स्वादिष्ट होता है।

भारत में विदेशियों का पर्यटक के रूप में घूमना फिरना तो सुना होगा आपने पर मायापुर में विदेशी पूरे तन-मन से श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन दिखाई देते हैं। जो वैष्ण संप्रदाय को धारण कर लिया साथ ही अपने बच्चों को भी उसी दिशा में ले जाते हैं। पता नहीं ये कैसी लीला है श्रीकृष्ण की जो उनके शरण में पहुँचता है, उनकी ही भक्ति में लीन/डूब जाता है। “हरे रामा हरे कृष्णा, हरे रामा, हरे-हरे” की ध्वनि हर जगह सुनाई देती है।

वहाँ अद्भुत मेला सा लगता है जहाँ मनोरम सामग्री मिलते हैं जैसे वहाँ का पोषाक घाघरा-चोली जैसे श्रीकृष्ण की गोपियाँ पहनतीं थीं। कृष्ण भगवान की मूर्ति, गाय की मूर्ति, बासुरी, प्रसाद इत्यादि। मायापुर आगे चलकर और प्रसिद्ध होने वाला है क्योंकि वहां एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाया जा रहा है।

फोर्ड मोटर कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अल्फ्रेड फोर्ड कृष्ण भक्ति में ऐसे तल्लीन हुए कि अब हरे कृष्णा आंदोलन को उँचाईयों तक पहुँचाना ही उनका उद्देश्य है। इस्कान के संस्थापक श्रील प्रभुपाद का सपना था इस्कान मुख्यालय मायापुर में वैदिक तकनीकी से से सबसे बड़ा मंदिर बनाने का, जिसे फोर्ड ने पूरा करने का निर्णय लिय़ा।

उन्होंने 50 एकड़ जमीन पर 400 करोड़ की लागत से बनने वाले मायापुर चंद्रोदय मंदिर के लिए 200 करोड़ रूपये का दान भी दिया है। इस्कान आंदोलन का मुख्यालय मायापुर में पहले से ही संस्था का सबसे बड़ा मंदिर स्थापित है। और इस मंदिर का निर्माण लगभग 2022 तक पूर्ण हो जाएगा। आगे चलकर यह पूरे विश्व में एक नामी और भव्य मंदिर के रूप में जाना जाएगा। दूर-दूर से लोग यहाँ दर्शन करने आएँगें जिससे मंदिर की ख्याति और बढ़ जाएगी। श्रील प्रभुपाद ने विदेश में जाकर धर्म का प्रचार किया और वो इसमें सफल भी रहे तथा उनका सपना भी पूरा हो रहा है। इस स्थान पर जो भी जाता है एक बार में दिल नहीं भरता, वह बार-बार वहाँ जाने के लिए तत्पर हो जाता है।

## सुक्तियाँ

कर्तव्य कभी आग और पानी की परवाह नहीं करता है। कर्तव्य पालन ही चित की शांति का मूल मंत्र है।

*-प्रेमचंद*

कर्म की परिसमाप्ति ज्ञान में और कर्म का मूल भक्ति अथवा संपूर्ण आत्म-समर्पण में है।

*-अरविंद*

केवल कर्महीन ही ऐसे होते हैं जो भाग्य को कोसते हैं और जिनके पास शिकायतों का बाहुल्य होता है।

*-पं.जवाहर लाल नेहरू*

निकम्मे बैठे हुए चिंतन करते रहना, अथवा बिना काम किए शुद्ध विचार का दावा करना
मानो सोते-सोते खर्राटे भरना है।

*-सरदार पूर्णसिहं*

मनुष्य के अन्तःकरण में सात्विकता की ज्योति जगाने वाली वही करूणा है।

*रामचंद्र शुक्ल*

चित्त जिस रूप की कल्पना करता है, वैसा ही हो जाता है।
आज जैसा वह है, वैसी ही उसने कल्पना की थी।

*-योगवासिष्ठ*

# साभार

**श्री दिनमणि मल्लिक,**
उपमहालेखाकार

आपका जनम कब हुआ ?
हमें मालूम नहीं था।
यह हमारे लिए कोई सामान्य घटना भी नहीं थी।

जब आपने हमारी बेटी को जनम दिया
यह एक बहुत बड़ी घटना थी।
फिर बेटा को जब जनम दिया
उससे भी बढ़कर मंजर था।

आप समझती हो स्वार्थी हूं ?
जी नहीं, बिलकुल नहीं,
सिर्फ सच्चाई।

परंतु अब
हम यह स्वीकार नहीं करते कि
आप पहले
कहीं और जनम लिया था और
चौबीस बरस बीता दिया।

हम मानते हैं कि
आप हमेशा हमारे साथ थी
वैसी ही रहेंगी
लम्बे अरसे.....
सहस्रवां बरस के बाद भी........

जनम दिन की बधाई

# नन्दिघोष का दारूदेवता

**श्री विभूति भूषण सामन्तराय,**
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

हे महाबाहु, लीलामय हे पुरूषोत्तम,
नन्दिघोष रथ का हे दारूदेवता,
कैसी लीला लगाए हो नीलाचल में बैठे,
कहाँ-कहाँ से छूट आते हैं साधू संत दर्शन के लिए,
पावन धाम श्री पुरूषोत्तम में,
भारत के सरोवर में उत्कल-कमल,
बीच में केशर साजे पुण्य नीलाचल,
धन्य हमारी ओड़िशा तुम्हारे लिए,
जहाँ विराजित दारूब्रह्म जगन्नाथ,
करोड़ों ओड़िया के दिलों की धड़कन,
गर्व, दम्भ, अभिमान और अस्मिता का चिह्न,
जगदीशपुरी नाम से जगत विख्यात,
नील महोदधि के किनारे कल्पवट के नीचे,
बाईस पावच्छ के परे नीलकन्दर में,
श्रीमन्दिर में विराजित चतुर्धा मूरति,
प्रभु जगन्नाथ बड़ा भाई बलराम,
भगिनी सुभद्रा और चक्र सुदर्शन,
बारह महीने में तेरह यात्रा महोत्सव,
नीलचक्र में उड़ता है ध्वजा पतित पावन,

ऐसा देव कहीं नहीं सारा संसार में,
छोड़कर रत्न सिहांसन,
भक्तबंधु आते हैं बड़दाण्ड में भक्तों के लिए,
आलिंगन करने को देने को दर्शन,
पतितपावन आते हैं पतितों के लिए,
चढ़कर तीन रथ,
तालध्वज, नन्दिघोष और देवदलन,
गुण्डिचा यात्रा में भक्त खींचते हैं तीन रथ,
रथरज्जु छुने से ही अपने को मानते हैं धन्य,
सर्वधर्म समन्वय यहीं श्रीक्षेत्र में,
पिता हमारा जगन्नाथ माता महालक्ष्मी,
संसार लगता है जैसे निज परिवार,
वसुधैव कुटुम्बकम नाम ही सार्थक इस पावन राज्य में,
धन्य है तुम्हारी लीला प्रभु जगन्नाथ,
तुम्हारे नाम से हम सब हैं पवित्र,
हे करूणामय,
दो हाथ जो बढ़ाए हम सबके लिए,
दूर से ग्रहण करो हमारी ये भक्ति,
सुख-शांति-आनन्द और अमृत के धाम,

हे चकानयन तुम्हें प्रणाम,
हे दुःखभंजन तुम्हें प्रणाम,
हे लक्ष्मीकांत तुम्हें प्रणाम,
हे नीलाद्रिनाथ तुम्हें प्रणाम।

# ललकार

(14 सितंबर 2019 को भुवनेश्वर
दूरदर्शन केंद्र से प्रसारित)

**रबीन्द्र नाथ चांद**
हिन्दी अधिकारी

ऐ मेरे वतन के दुश्मनों
हमने आजादी का डंका बजाया,
वतन फरोशों के सीने में
आजादी का तिरंगा लहराया।

वतन के नाम मिटाने वाले
ऐ मेरे दुश्मन दोस्तों,
तुमने अलगाव वाद का परचम फहराया,
भारत मां की शान को ललकारा,
जात-पात का सेहरा बांधकर
भाई-भाई के रिश्तों को तोड़ा।

वक्त बे वक्त कायरों जैसे
अंधेरों से हमले किए,
हर हमले में सैकड़ों माताओं को
बेवा बना दिए।

औरों के अन गिनत घरों को जला दिए
अपना जीना हराम किए,
आने वाली पीढ़ी के
सपने भी छीन लिए।

बोलती सड़कों को शमशाम बना दी,
हंसती खेलती कलियों की मुस्कानें छीन ली,
भूखे बच्चों को रोटियां नहीं
इंसान की बोटियों बांटी,
और बर्बरता की हर कहानी को
आतंकवाद की संज्ञा दी।

यह संतों की पवित्र भूमि है,
यहां गांधी आए, सुभाष आए
सबने अपना अपना खून बहाए,
उनके ही खून से सनी मिट्टी पर
आजादी का तिरंगा लहराए।

यहां असूरों का संहार हुआ,
कौरवों का सत्यनाश हुआ,
आजादी कुचलने वालों को
तड़पा तड़पा कर मारा गया।

इस देश की मंदिर मस्जिद ही नहीं
राम रहिम पहचान है,
हिंदू, मुसलिम, सीख, ईसाई
भारत मां की शान है।

हम किसी की मौत पर कफन नहीं
दुख बांटते हैं,
मुसीबत में एहसान नहीं
कंधे से कंधे मिलाते है।
हम मैदान ए जंग में छिप कर नहीं
सरे आम मोर्चा संभालते है,
कर्मभूमि में षड़यंत्र नहीं,
करो या मरो की रचना करते हैं,
जिंदगी के हर मोर्चे पर
अमर इतिहास बनाते है।

हम अश्क बहाते नहीं, खुद पी जाते हैं
जिंदगी के हर जुलूस से, आगे निकल जाते हैं
हम खून पसीनों से फूल खिलाते हैं
मंजील हमारी मकसद है,
दूरियों से डरते नहीं।
हम हिम्मत की तलवार से लड़ते हैं
बर्फीली चट्टानों को तोड़कर सरहद की रक्षा करते हैं
वतन की रक्षा के लिए हर बार,
कुरूक्षेत्र रचा करते हैं।

दंगा करने वाले ऐ मेरे दोस्तों,
अब तो अपनी हरकतों से बाज आओ,
यह देश खून की होली नहीं, बलिदान मांगता है,
इसे नफरत के कांटों से नहीं
मोहब्बत के फूलों से सजाओ।

याद रखना, जब तक सूरज चांद रहेगा
तब तक हिंदुस्तान हमारा आजाद रहेगा।
अगर हिम्मत है, तो अपने पौरूष के बल पर
सच्चाई की लड़ाई लड़कर दिखलाओ,
वरना, वक्त से पहले खुद मिट जाओ।

# मच्छर की लगन

**श्री विश्वास कुमार सिन्हा,**
सहायक लेखा अधिकारी

मच्छर है इसका नाम
खूब लगन से करें ये अपना काम,
कभी ये डेंगू फैलाएँ
तो कभी मलेरिया ले आए,
और तो और ये भी कहते हैं ये सब मिलकर
कि इतना आसान नहीं ये सब काम
सुबह-शाम, दिन-रात मेहनत करके करते है काम
चिकनगुनिया हो या जीका
बिमारी फैलाने का है इनके पास सही तरीका
गंदे जल के हमेशा रहें ये आस-पास
ताकि ये रह सके आस-पास
फिर ये कहते हैं कि नहीं आसान ये सब काम
सर्दी की धूप हो या गर्मी की छाँव
शहर की भीड़ हो या शांत सुखद गाँव
इन हर जगहों के साथ-साथ

कूड़े के अम्बार में,
ये मच्छर मिल जाते हैं
इन्सानों की हर राह में,
फिर ये सब मिलकर कहते हैं अपनी परेशानियाँ कि,
ये नीम के वृक्ष और ये ऑडोमास
इन सब में है इनके दुश्मनों का वास
पर अपनी कमजोरियों के बावजूद,
जैसे कुछ भले ही एक थाप में मर जाँए
पर खून चूसने का ये वचन निभाएँ
इसलिए बचके रहना इन सबसे,
कि मच्छर है इनका नाम
खूब लगन से करें ये अपना काम।

# राजभाषा

**श्री सिमाचल साहु,**
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

दिल से दिल को जोड़ती है हिंदी
हमको करना है इसका प्रयोग
हिंदी है राजभाषा हमारी
राजभाषा में करें इसका उपयोग

काम-काज और लिखना पढ़ना
सबकुछ है पूरा आसान
एकता का स्वर्ण सूत्र है
हिंदी भाषा महान।

# फनी

**सुश्री रूपा नीलमणि एक्का,**
वरिष्ठ लेखाकार

ये चक्रवात भी क्या चक्रवात है।
नाम "फनी" जिसका आता है।।
आते ही दस्तक दे गया वह।
फनी का विकराल रूप दे गया वह।।

पक्षियां गुनगुनाते थे इनकी टहनियों पर।
झूमते गाते सदा ये रहते।।
दुल्हन जैसी छाया जिसकी हम पर पड़ती थी।
खुशी जैसे हमारे चेहरे पर झलकती थी।।

छीन ली इसने हमारी प्रकृति की अतुल्य शोभा।
लूट ले गया वो हमसे ही हमारा।।
प्रकृति का ये अनमोल गहना।
हरियाली की छाया जिसकी हम पर पड़ती थी।।

न रही अब ये सारी शोभाएं।
बिगड़ी है प्रकृति की आभाएं।।
मिलकर आज हम वादा यह कर जाएं।
अपनी प्रकृति की शोभा हम फिर बढ़ाएं।।

वृक्षों की शोभा जिसकी हमें मिलती थी।
जीवन सोता था उसकी गोद में।।
निहार कर जिसकी शोभा का औऱ।
गाया करता था ये गीत।।

इस उजड़े चमन में बहार।
फिर से लाना है।।
ओड़िशा को फिर से।
हरा बनाना है, हरा बनाना है, हरा बनाना है।।

# बाबुल का आँगन

**मोती प्रधान,**
लिपिक

छोड़ चली मैं बाबुल का आँगन
अपने पिया के संग,
जहाँ बिताए थे हमने
हमारे पूरे बचपन,
वो बचपन जिसमे था
पापा का लाड़ और मम्मी का दुलार।
चली मैं चली अपने पिया के संग
बसाने किसी और का सपना.....
जिस गली हमने बिताए थे
हमारे बचपन के मीठे-मीठे पल,
छोड़ के जा रहे हैं
सबकुछ पीछे हम कल,
ये रात बीत जाएगी कोई आएगा
पराया करके जाएंगें वहाँ कल।
चली मैं चली अपने पिया के संग
बसाने किसी और का सपना......
जिस आँगन में हमने सीखा था चलना
वो आँगन होगा पराया,
जिस घर में रहते थे हम
वो घर होगा पराया,
जिनको हम बोलते थे अपना
वो अपने अब होंगे पराया।
चली मैं चली अपने पिया के संग
बसाने किसी और का सपना......
नया आँगन नया घर नए लोग
सबको बनाना होगा अपना,
छूट जाएगी वो मस्ती
वो खेल और वो सपने।
चली मैं चली..........

# गुरू

**श्री वीरेन्द्र यादव,**
वरिष्ठ लेखाकार

मेरे शब्दों में मेरे गुरूजनों के लिए

गुरू ज्ञान के सागर हैं
मैं उस सागर की मछली,
उस ज्ञान सागर को मैं अर्पित हो जाऊँ
जैसे आसमान में खुली हवा को उड़ती तितली।
गुरू ज्ञान की भाषा है
मैं उस भाषा की वाणी,
उस भाषा में मैं रंग जाऊँ
जैसे होली के रंगों में रंगा हर प्राणी।
गुरू ज्ञान के ईश्वर हैं
मैं उस ईश्वर का पुजारी,
उस ईश्वर को मैं रोशन कर जाउँ
जैसे सूरज संग निकली रोशन उजियारी।
गुरू बिन ज्ञान कहाँ मैं पाऊँ,
बिन गुरू मैं अज्ञानी कहलाऊँ.......

## सुक्तियाँ

कबिरा गरब न कीजिए, कबहु न हँसिए कोए।
उबहू नाव समुंद्र में, को जाने का होया।।

*-कबीर*

मुठ्ठी भर चना सोने की शिला से भी ज्यादा कीमती होता है, बशर्ते की भूख से प्राण जा रहे हों।

*-परशुराम*

जैसी मन की भावना वैसी छवि दिखलायी देगी। -तुलसीदास

जिसने जिह्वा पर नियंत्रण पा लिया, वह सदा सुखी रहता है।

*-सुभाषित*

तपस्या से बढ़कर सत्कर्म है।

*-मीरा*

# पंछी हैं हम

**श्री अभय कुमार सामंतराय,**
वरिष्ठ लेखाकार

दूर गगन के पंछी हैं हम
ऊँचा उड़ना चाहते हैं।
उड़ते-उड़ते बादल के पीछे
कभी-कभी छुप जाते हैं।
उड़ते हुए विमानों से
टकरा कर गिर जाते हैं।
सागर गगन से मिलता जहाँ
उतरना हम वहाँ चाहते हैं।
जितने उसके पास जाते हैं
मंजिल उतनी दूर लगती है।
भूख से तड़प तो खाना खाने
पेड़ों पर चड़ जाते हैं।
उसके फल खाते-खाते
खुद भी शिकार बन जाते हैं।
प्रकृति चाहती है हमें
हम भी उसे चाहते हैं।
आप लोग भी कोशिश करें
यही निवेदन हम करते हैं।

# क्या आप जानते हो ?

**श्री सुब्रत कुमार सिंह,**
लिपिक

तीन चीजें फिर कभी नहीं मिलती
माँ, बाप और बचपन
तीन चीजें फिर कभी नहीं रूकती
लहरें, समय और मौत
तीन चीजें फिर कभी नहीं मरती
सत्य, धर्म और वीरता
तीन चीजें आत्मा से अलग नहीं होती
मन, बुद्धि और सरकार
तीन ऋण जो कभी नहीं चुकता है
मातृ, पितृ और गुरु
तीन चीजें विद्यार्थियों में होनी चाहिए
आज्ञाकारी, लगन और दृढ़ संकल्प
तीन चीजों को संकट के समय भूलना नहीं चाहिए
इष्टदेव, कर्तव्य और धैर्य।

# ग्राहक

**श्री मनोरंजन पाणिग्राही**
लेखा अधिकारी

बाजार में बिकने के लिए किसी की टोकरी में है
फूलगोभी केप्सिकम टमाटर गाजर,
मेरी टोकरी में है थोड़ी भाजी,
मुट्ठी भर हरी धनिया।
कोई बेचते हैं हीरे, नीलम, सोना-चांदी,
अष्टधातु तथा वैदुर्यमणि
मेरी टोकरी में चंपा-चमेली, बेल, रजनीगंधा, कनेर,
लाल कमल, नरगिस, लीली ।
दो दिन के हाट की सौदेबाजी में
कोई एक पुत्र और प्रासाद, स्त्री और नारीरत्न,
यशस्वी, मुकुट जड़े हुए राजप्रसाद, चमकती हुई तलवार,
व्याघ्र खाल और सिंहासन।
मेरी जेब में मुद्रा नहीं है, अनाज नहीं है,
फूटी कौड़ी भी नहीं है
मन की अन्न हांडी है तो महाभाव प्रसाद,
प्राचीन वर्णमालाओं के कुछ अमृत अक्षर।
मैं खरीदा चंदन तिलक की मुट्ठी भर माटी
खाली पड़े हैं इसीलिए थोड़ा सा आकाश क्या लूं !
सोचकर दो चार अबोध नक्षत्र,
अनावश्यक लापता मुंह लटकाए कोने में अकेले
खड़ा सर्वत्र है इसीलिए झूठा दिखावा कहीं का न रहने वाला।
पानी और राख का वो हाथ-पांव विहिन उंगली भर पुरूष।
इस बाजार की खरीदारी में,
मैं भी एक पुराना ग्राहक हूं।

# विविधा

## कार्यालय समाचार

(अवधि अप्रैल 2019 से जुलाई 2019)

### नियुक्तियाँ

| क्रमांक | नाम एवं पदनाम | तिथि |
|---|---|---|
| 1 | सुश्री पार्बती सोरेन, लिपिक | 25.06.2019 |
| 2 | श्री शशांक शेखर सामल, लिपिक | 26.06.2019 |
| 3 | श्री राजदेव साहू, लिपिक | 28.06.2019 |
| 4 | श्री राकेश कुमार नायक, एमटीएस | 28.06.2019 |
| 5 | श्री जेमी संजय कुमार, लेखाकार | 12.07.2019 |

समस्त नवनियुक्त कर्मचारियों का वातायन परिवार की ओर से इस कार्यालय में हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागत है।

### पदोन्नतियाँ

सहायक लेखा अधिकारी से लेखा अधिकारी

| | | |
|---|---|---|
| 1 | श्री दशरथ महांती | 01.04.2019 |
| 2 | श्री बिरंची नारायण साहू | 01.04.2019 |
| 3 | श्री गोपाल चंद्र मिश्र | 01.04.2019 |
| 4 | सुश्री पी सरोजा | 01.04.2019 |
| 5 | श्री निरंजन सेनापति | 01.04.2019 |
| 6 | श्री गदाधर साहु-।। | 03.07.2019 |
| 7 | श्री टी. प्रकाश राव | 01.08.2019 |

सहायक लेखा अधिकारी पद पर पदोन्नति

| | | |
|---|---|---|
| 1 | श्री अमरेश कुमार प्रभाकर | 25.04.2019 |
| 2 | श्री बैद्यनाथ कुमार | 25.04.2019 |
| 3 | श्री मनीष कुमार | 25.04.2019 |
| 4 | सुश्री भारती महापात्र | 25.04.2019 |
| 5 | श्री दिनेश पांडे | 25.04.2019 |
| 6 | श्री अशोक कुमार देहुरी | 25.04.2019 |

लिपिक से लेखाकार

| | | |
|---|---|---|
| 1 | सुश्री मोती प्रधान | 21.05.2019 |
| 2 | श्री लिंगराज द्विवेदी | 21.05.2019 |
| 3 | श्री गोपाल सोरेन | 21.05.2019 |
| 4 | सुश्री जिताशा मिश्र | 21.05.2019 |
| 5 | श्री ब्यासदेव चव्हान | 21.05.2019 |
| 6 | श्री वी. वेंकटेश | 23.05.2019 |

एमटीएस से लेखाकार

| | | |
|---|---|---|
| 1 | श्री अजय कुमार पुजारी | 21.05.2019 |

समस्त पदोन्नत अधिकारियों/कर्मचारियों को वातायन परिवार की ओर से हार्दिक अभिनंदन एवं ढेरों बधाइयाँ।

## सेवानिवृत्ति/स्वैच्छिक सेवानिवृति

(मार्च 2019 से जुलाई 2019)

| | | |
|---|---|---|
| 1 | श्री ऋषिकेश मिश्रा, एमटीएस | 31 मार्च, 2019 |
| 2 | श्री दुर्योधन परिडा, व.ले. | |
| 3 | श्री लक्ष्मण चंद्र बेहेरा, व.ले. | |
| 4 | श्री बिष्णु चंद्र दाश, व.ले. | |
| 5 | श्री गोविंद चंद्र दास, स.ले.अ. | |
| 6 | श्री क्षेत्रबासी दलाई, व.ले.अ. | |
| 7 | श्री पितांबर रथ, ले.अ. | |
| 8 | श्री पितांबर साहु, ले.अ. | |
| 9 | श्री अनिरूद्ध प्रधान, ले.अ. | |
| 10 | श्री रामचंद्र सेठी, व.ले. | 30 अप्रैल, 2019 |
| 11 | श्रीमती भाग्यबती दलाई, स.ले.अ. | |
| 12 | श्री प्रमोद कुमार पंडा-I, स.ले.अ. | |
| 13 | श्री बिद्याधर सेठी, सुपरवाईजर | |
| 14 | श्री जसपति नायक, व.ले. | |
| 15 | श्री बिश्वमोहन बार्ला, सुपरवाईजर | 31 मई, 2019 |
| 16 | श्री एस के साफिरुद्दीन, सुपरवाईजर | |
| 17 | श्री आलेख चंद्र बेहेरा, सुपरवाईजर | |
| 18 | श्री रबिन्द्रनाथ स्वाईं, स.ले.अ. | |

| | | |
|---|---|---|
| 19 | श्री चरण नायक, व.ले. | 30 जून, 2019 |
| 20 | श्री जदुमणि हेम्ब्रम, व.ले. | |
| 21 | श्री रघुनाथ सेठी, व.ले. | |
| 22 | श्री प्रमोद कुमार राउत, स.ले.अ. | |
| 23 | श्रीमती सुचित्रा भट्ट, व.ले.अ. | 31 जुलाई, 2019 |
| 24 | श्री ललित मोहन दाश-II, व.ले.अ. | |
| 25 | श्री दिलिप कुमार नायक, व.ले. | |
| 26 | श्री पूर्णचंद्र माझी, व.ले. | |

इस कार्यालय में सत्य, निष्ठा और ईमानदारी के साथ लंबे सेवाकाल के बाद सेवानिवृत्त हुए सभी अधिकारी और साथी कर्मचारियों के प्रति वातायन परिवार का श्रद्धापूर्वक नमन। सेवोपरांत आगे की दीर्घायु की कामना करते हुए ईश्वर से सबके लिए कुशल स्वास्थ्य तथा मंगलमय जीवन की कामना करता है।

## सुक्तियाँ

विनय पात्रता प्रदान करती है।

*-हितोपदेश*

अति क्रोध, कटुवाणी, दरिद्रता, स्वजनों से वैर, नीचों का संग और कुलीन की सेवा-
ये नरक में रहने वालों के लक्षण हैं।

*-चाणक्य*

माया मोह में उलझा आदमी कैसे-कैसे नाच नहीं नाचता है।

*-चार्वाक*

शीघ्र नाशवान वस्तुएं बड़ी खूबसूरत होती है।

*-अष्टाचक्र*

निर्भिकता स्वतंत्रता की पहली सीढ़ी है।

*-प्रेमचंद*

## अत्यंत रोचक व उत्कृष्ट रचनाएं हैं।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका "वातायन" के 97वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पुरी मंदिर के सुंदर चित्र से सुसज्जित पत्रिका का मुखपृष्ठ अनूठा है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ जैसे व्यापार एक कला, अपनो से अपनापन, मैं रजनीगंधा तथा ओ मेरे मन, भूला नहीं, आरज़ू, माता-पिता, आओ मिलकर स्वच्छ बनें तथा तेरी याद में कविताएं अत्यंत रोचक व उत्कृष्ट हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

**प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा)-III,**
महाराष्ट्र, मुंबई-400020

## सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "वातायन" का 97वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं। कुमारी बबिता मणि की सिर्फ देह नहीं दुनिया है स्त्री, सोनू कुमार की भूला नहीं, रबीन्द्र नाथ चाँद की आरज़ू, सुचित्रा भट्ट की वो प्यार है, निधि गर्ग की तेरी याद में, रचनाएँ विशेष तौर पर सराहनीय है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

**कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),**
चण्डीगढ़-160017

## पत्रिका उत्कृष्टता की परिचायक है।

आपके कार्यालय के पत्र सं.हि.प्र./पत्रिका/37, दिनांक 24.05.2019 के साथ संलग्न हिंदी पत्रिका "वातायन" के 97वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका के मुख आवरण पर श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी एवं विविध रंगों से सुसज्जित संपूर्ण पत्रिका निश्चय ही उत्कृष्टता की परिचायक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख व कविताएँ न केवल उत्कृष्ट हैं अपितु अत्यंत ही सराहनीय हैं, विशेषतया श्री पुरूषोत्तम नंद का भाषाई लेख शास्त्रीय भाषा, श्री बिभूति भूषण सामंतराय की कविता ओ मेरे मन, श्री रवीन्द्र नाथ चांद की कविता आरज़ू।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र है। पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

**महालेखाकार( लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय का कार्यालय,**
मध्यप्रदेश, ग्वालियर-474002

# हिंदी गतिविधियों की कुछ झलकियाँ

# हिंदी गतिविधियों की कुछ झलकियाँ